डिप्लोमा इन ऐलिमेन्ट्री एजुकेशन (डी.एल.एड.)
(प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि)

द्विवर्षीय पाठ्यक्रम

प्रायोगिक संस्करण

2018

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
शंकरनगर रायपर,छत्तीसगढ़

डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम

(A) पाठ्यक्रम के उद्देश्यों में निहित सिद्धांत

सिद्धांत– 1

छात्राध्यापक विषयों में निहित अवधारणाओं,जानकारी प्राप्त करने के तरीकों और उनकी संरचना को समझेंगे। वे सीखने के अनुभवों को इस प्रकार तैयार करेंगे कि विषय सीखना बच्चों के लिए अर्थपूर्ण गतिविधि होगा।

छात्राध्यापक बच्चों को सिखाए जाने वाले विषयों की मुख्य अवधारणाओं, मान्यताओं, विषय वस्तु के पक्ष एवं विपक्ष में प्रस्तुत किए जा सकने वाले तर्क से संबंधित जानकारी प्राप्त करने की विधियों एवं तरीकों के विषय में बच्चों की समझ बनाने में अपनी भूमिका समझ सकेंगे।

बच्चों की विषय संबंधी अवधारणात्मक समझ और गलत धारणाएँ ज्ञान के सीखने को कैसे प्रभावित करती है, छात्राध्यापक यह समझेंगे। छात्राध्यापक उनके विषय ज्ञान को दूसरे विषय क्षेत्र से जोड़ सकेंगे।

सिद्धांत– 2

छात्राध्यापक समझेंगे कि बच्चों का विकास कैसे होता हैं और वे कैसे सीखते हैं तथा बच्चों को सीखने के कैसे–कैसे मौके दिए जा सकते हैं जो उनके बौद्धिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत विकास में मदद कर सकें।

छात्राध्यापक सीखना कैसे होता है, बच्चा ज्ञान का निर्माण कैसे करता है, कौशल कैसे अर्जित करता है और दिमागी आदतें कैसे विकसित होती हैं, यह समझेंगे साथ ही यह भी जानेंगे कि बच्चों के सीखने को बढ़ावा देने के लिए किस प्रकार के निर्देश उपयोगी हैं। छात्राध्यापक बच्चों के सीखने की क्षमता पर प्रभाव डालने वाले शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक और संज्ञानात्मक विकास को भी समझेंगे।

छात्राध्यापक अपेक्षित विकास की प्रक्रिया और शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक और संज्ञानात्मक क्षेत्रों में वैयक्तिक अंतर की सीमा या फैलाव, से परिचित होंगे। वे सीखने की तैयारी का स्तर जान सकेंगे एवं एक क्षेत्र में विकास का दूसरे क्षेत्रों के प्रदर्शन या उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को समझ सकेंगे।

सिद्धांत– 3

छात्राध्यापक बच्चों के सीखने के अलग–अलग तरीकों को समझेंगे और सीखने की विभिन्नता को ध्यान में रखकर सीखने के अवसर तैयार कर सकेंगे। छात्राध्यापक ऐसे अपवाद क्षेत्रों, जैसे सीखने में अक्षम, इंद्रियों द्वारा पहचानने में असमर्थ और शारीरिक या मानसिक रूप से कमजोर,बच्चों की समस्याओं से परिचित होंगे।

सिद्धांत– 4

छात्राध्यापक विभिन्न अनुदेशात्मक प्रविधियों को समझेंगे तथा उनका उपयोग बच्चों में समालोचनात्मक सोच, समस्या समाधान तथा उपलब्धि क्षमता/कौशल का विकास करने में सफल हो सकेंगे।

छात्राध्यापक सीखने से संबंधित विभिन्न संज्ञानात्मक संक्रियाओं को समझेंगे। (उदाहरण के लिए समालोचनात्मक और सृजनात्मक सोच, समस्या का स्वरूप तथा समस्या समाधान, अन्वेषण तथा प्रत्यास्मरण) और कैसे इन संक्रियाओं/प्रक्रियाओं से सीखने के लिये परिस्थितियाँ निर्मित की जा सकती है, समझेंगे ।

सिद्धांत– 5

छात्राध्यापक शैक्षिक (सीखने के लिए) वातावरण निर्माण के लिए वैयक्तिक तथा सामूहिक प्रोत्साहन की समझ का उपयोग कर सकेंगे। जो सकारात्मक सामाजिक अंतःक्रिया, सीखने में सक्रिय भागीदारी तथा स्वप्रोत्साहन को बढ़ावा देगा।

छात्राध्यापक मनोविज्ञान, मानव विकास तथा समाज शास्त्र में निहित मानवीय व्यवहार तथा प्रोत्साहन संबंधित ज्ञान का प्रयोग ऐसी प्रविधियों के निर्माण में कर सकेंगे जो संगठन तथा वैयक्तिक एवं सामूहिक कार्य में सहायक हो।

छात्राध्यापक समझेंगे कि किस प्रकार से समुदाय समूह में कार्य करता है तथा व्यक्तियों को प्रभावित करता है और यह भी समझेंगे कि कैसे व्यक्ति, समूह को प्रभावित करता है।

छात्राध्यापक जानेंगे कि कैसे जटिल सामुदायिक संरचना में व्यक्ति की सहायता करें जिससे वे एक–दूसरे के साथ सहयोगात्मक रूप से कार्य करें।

सिद्धांत– 6

छात्राध्यापक प्रभावशाली शाब्दिक, अशाब्दिक संवाद के ज्ञान का उपयोग कक्षा में छात्रों को सक्रिय, खोजपरक, सहयोगात्मक तथा सामूहिक अंतःक्रिया को प्रोत्साहित करने के लिए करेंगे। छात्राध्यापक संवाद (communication) के सिद्धांत, भाषा विकास तथा सीखने में भाषा की भूमिका को समझेंगे। छात्राध्यापक समझेंगे कि कैसे संस्कृति और लिंगभेद कक्षा में बातचीत को प्रभावित करते हैं। छात्राध्यापक शाब्दिक तथा अशाब्दिक संवाद के महत्व को जानेंगे।

सिद्धांत– 7

छात्राध्यापक सीखने–सिखाने की योजना का निर्माण, विषयवस्तु के ज्ञान, छात्र, समुदाय और पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के आधार पर करेंगे।

छात्राध्यापक में सीखने के सिद्धांतों, विषयवस्तु, पाठ्यचर्या निर्माण, ज्ञान के सृजन की समझ स्पष्ट होगी । साथ ही छात्राध्यापक यह भी जानेंगे कि पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु इस ज्ञान का उपयोग शिक्षण अधिगम योजना निर्माण में किस प्रकार कर सकते हैं।

छात्राध्यापक समझेंगे कि किस प्रकार बच्चों की व्यक्तिगत रुचि, आवश्यकता, अभिवृत्ति और सामुदायिक संसाधन का उपयोग शिक्षण अधिगम योजना निर्माण में किया जाए ताकि पाठ्यचर्या के उद्देश्यों एवं बच्चों के अनुभवों के मध्य प्रभावशाली सेतु का निर्माण हो ।

सिद्धांत– 8

छात्राध्यापक सीखने वाले के सामाजिक, शारीरिक विकास और निरंतर बौद्धिक विकास को सुनिश्चित एवं मूल्यांकित करने हेतु औपचारिक एवं अनौपचारिक मूल्यांकन प्रविधियों को समझेंगे और उपयोग करेंगे।

छात्राध्यापक ,बच्चे किस प्रकार सीखते हैं, का मूल्यांकन, वे क्या जानते हैं? और क्या कर सकते हैं? किस प्रकार के अनुभव उनके आगे के विकास एवं वृद्धि के लिए सहायक होंगे के आकलन के गुण ,उपयोग, लाभ और सीमाओं को समझेंगे।

सिद्धांत–9

छात्राध्यापक कला के बुनियादी सिद्धान्तों से परिचित होंगे। जिससे उन्हें अपनी कलात्मक प्रवृत्तियों को उभारने में मदद् मिलेगी। वे महानतम धरोहरों से परिचित होंगे ताकि अपने परिवेश की उत्कृष्ट कलाकृतियों का रसास्वादन कर सकें।

(B) प्रवेश प्रात्रता

स्कूल शिक्षा विभाग मंत्रालय दाऊ कल्याण सिंह भवन, रायपुर दिनांक 31 जनवरी 2008 की अधिसूचना क्रमांक एफ 6–2/08/20 राज्य शासन एतद् द्वारा प्रवेश में डाईट/बी.टी.आई./महाविद्यालयों/संस्थाओं में द्विवर्षीय डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए नियम (छत्तीसगढ़ राजपत्र) तैयार किए गए हैं।

(C) पाठ्यक्रम का नाम परिवर्तन –

प्रशिक्षण छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग,मंत्रालय महानदी भवन नया रायपुर पत्र कमांक एफ 6–5/2016/20 तीन नया रायपुर 19 दिसम्बर 2016 के अनुसार NCTE 2014 के दिशा निर्देशों के अनुसार राज्य में चल रहे डी.एड़ पाठ्यक्रम को डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में बदले जाने हेतु प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई।

(D) प्रशिक्षण अवधि

प्रशिक्षण अवधि दो शैक्षणिक वर्षों की होगी। दोनों सत्र 1 जुलाई से 30 जून तक के होंगे। प्रत्येक सत्र के कार्यों के दिनों की संख्या कम से कम 200 परीक्षा अवधि को छोड़कर होगी जिसमें शाला इंटर्नशिप के अंतर्गत प्रथम वर्ष 24 कार्य दिवस शाला अवलोकन शेष दिवस सैद्धांतिक पढ़ाई, प्रायोजना कार्य करने, परीक्षा हेतु एवं द्वितीय वर्ष 96 कार्य दिवस शाला अनुभव कार्यक्रम के अंतर्गत छात्राध्यापक चयनित शाला में संलग्न होंगे। अध्यापन हेतु व्याख्यान विधि का उपयोग न्यूनतम होगा। छात्राध्यापक स्वयं अध्ययन कर तथ्यों को जाँचेंगे एवं समूह चर्चा द्वारा स्वयं के लिए निष्कर्ष निकालेंगे। ग्रंथालय का भी अध्ययन हेतु अधिकतम उपयोग करेंगे। छात्राध्यापक आवश्यकता अनुसार आई.सी.टी. का भी उपयोग करेंगे।

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

सैद्धांतिक परीक्षा–

प्रश्न पत्र क्रमांक	विषय का नाम	प्रस्तावित कुल कालखण्ड	सैद्धांतिक परीक्षा के अंक	न्यूनतम उत्तीर्णांक के अंक	आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा के अंक	न्यूनतम उत्तीर्णांक के अंक	योग	विशेष
पहला	बाल विकास और सीखना	120	80	40	20	10	100	सैद्धांतिक व व्यावहारिक (आंतरिक एवं प्रायोगिक) परीक्षा में पृथक–पृथक उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा।
दूसरा	ज्ञान शिक्षा क्रम व शिक्षण शास्त्र	120	80	40	20	10	100	
तीसरा	शैक्षिक तकनीकी	120	80	40	20	10	100	
चौथा	हिन्दी भाषा शिक्षण स्तर –1	120	80	40	20	10	100	
पांचवा	**English Language Proficiency**	120	80	40	20	10	100	
छठवां	गणित शिक्षण	120	80	40	20	10	100	
सातवां	पर्यावरण व पर्यावरण शिक्षण	120	80	40	20	10	100	
आठवां	शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं विकास	120	80	40	20	10	100	
योग–1		**960**	**640**	**320**	**160**	**80**	**800**	

2. व्यावहारिक परीक्षा

क्र.	विषय	प्रस्तावित कुल कालखण्ड	बाह्य मूल्यांकन के अंक	आंतरिक मूल्यांकन के अंक	पूर्णाक
अ	कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति भाग–1	24	20	20	40
ब	योग शिक्षा स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावात्मक शिक्षा– भाग–1	24	20	20	40
स	कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास भाग–1	24	20	20	40
द	कम्प्यूटर शिक्षण भाग–1	24	20	20	40
ई	शाला इंटर्नशीप कार्यक्रम (शाला अवलोकन कार्यक्रम) (कक्षा 1 से 8)	इंटर्नशीप –04 सप्ताह= 30 दिवस 24 कार्य दिवस =144	20	20	40
	योग 02	**240**	**100**	**100**	**200**
	महायोग (योग 01 एवं योग 02)	**1200**	**740**	**260**	**1000**

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष

1. सैद्धांतिक परीक्षा–

प्रश्न पत्र क्रमांक	विषय का नाम	प्रस्तावित कुल कालखण्ड	सैद्धांतिक परीक्षा के अंक	न्यूनतम उत्तीर्णांक के अंक	आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा के अंक	न्यूनतम उत्तीर्णांक के अंक	योग	विशेष
नवां	आधुनिक विश्व के संदर्भ में भारतीय शिक्षा	**90**	80	40	20	10	100	सैद्धांतिक व व्यावहारिक (आंतरिक एवं प्रायोगिक) परीक्षा में पृथक–पृथक उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा।
दसवां	सामाजिक ,सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम	**90**	80	40	20	10	100	
ग्यारहवां	विविधता,समावेशी शिक्षा और जेण्डर	90	80	40	20	10	100	
बारहवां	हिन्दी शिक्षण स्तर –2	90	80	40	20	10	100	
तेरहवां भाग 01	अंग्रेजी शिक्षण /	45	40	20	10	05	50	
तेरहवां भाग 02	संस्कृत शिक्षण	45	40	20	10	05	50	
चौदहवां	गणित शिक्षण/विज्ञान शिक्षण/सामाजिक विज्ञान शिक्षण (कोई एक विषय)	90	80	40	20	10	100	
योग 01		**540**	**480**	**240**	**120**	**60**	**600**	

2. व्यावहारिक परीक्षा

क्र.	विषय	प्रस्तावित कुल कालखण्ड	बाह्य मूल्यांकन के अंक	आंतरिक मूल्यांकन के अंक	पूर्णांक
अ	कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति भाग–2	21	20	20	40
ब	योग शिक्षा स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावात्मक शिक्षा– भाग–2	21	20	20	40
स	कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास भाग–2	21	20	20	40
द	कम्प्यूटर शिक्षण भाग–2	21	20	20	40
ई	शाला इंटर्नशीप कार्यक्रम (शाला अनुभव कार्यक्रम)–(कक्षा 1 से 8)	इंटर्नशीप –16 सप्ताह= 120 दिवस, 96 कार्य दिवस = 576	120	120	240
योग 02		**660**	**200**	**200**	**400**
महायोग (योग 01 एवं योग 02)		**1200**	**680**	**320**	**1000**

1. सैद्धांतिक विषयों की मुख्य परीक्षा छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल द्वारा प्रत्येक सत्र के अन्त में होगी। मण्डल द्वारा प्रत्येक मुख्य परीक्षा के परिणाम के बाद उसी सत्र के लिए एक अनुगामी परीक्षा होगी।
2. प्रत्येक सैद्धांतिक प्रश्न पत्र में आंतरिक मूल्यांकन हेतु 20 अंक एवं बाह्य मूल्यांकन (मण्डल द्वारा) में प्रति विषय 80 अंक होंगे। बाह्य मूल्यांकन के अंतर्गत प्रत्येक प्रश्न पत्र 3 घण्टे का होगा।
3. सैद्धान्तिक विषयों में आन्तरिक मूल्यांकन के पीछे दृष्टि यह है कि छात्राध्यापक दी गई विषयवस्तु और पठन सामग्री के आधार पर अपने अनुभवों को मिलाकर सोचने के लिए तैयार हो, स्वयं चिंतन कर सके तथा समस्याओं पर अपनी दृष्टि और विचार विकसित कर सके । इन आन्तरिक मूल्यांकन को लेकर कुछ बातों पर ध्यान रखने की आवश्यकता है।
   - कुछ प्रायोजनाएँ नमूना मात्र हैं। हम ऐसा मानते है कि आन्तरिक मूल्यांकन के लिए प्रत्येक छात्राध्यापक को स्वयं इन इकाइयों की विषयवस्तु पर आधारित आन्तरिक मूल्यांकन को लेकर कुछ बातों पर ध्यान रखने की आवश्यकता है।
   - आन्तरिक मूल्यांकन की प्रायोजना प्रत्येक छात्राध्यापक की अलग–अलग हो सकती है। यानी किसी एक डाइट में पढ़ाने वाले छात्राध्यापक की प्रायोजना उसके या किसी दूसरे डाइट में पढ़ाने वाले से भिन्न हो सकती है अर्थात् प्रत्येक छात्राध्यापक को स्व–विवेक से भी प्रायोजना बनानी है।

- डी.एल.एड. के पाठ्यक्रम में इन आन्तरिक मूल्यांकन की प्रायोजनाओं का प्रत्येक वर्ष में एक ही होना अनिवार्य नहीं है। हर वर्ष ये अलग–अलग हो सकती हैं अर्थात् ऐसा नहीं माना जाए कि इस वर्ष में प्रथम वर्ष के छात्राध्यापक को जो प्रायोजना दी गई है। वही अगले वर्ष प्रवेश लेने वाले प्रथम वर्ष के छात्राध्यापक को भी दी जाए।
- प्रत्येक छात्राध्यापक अपने तरीके से इनके बारे में सोचे। प्रायोजना ऐसी हों जो कि अध्याय की विषयवस्तु के आधार पर सोचकर जवाब देने के लिए छात्राध्यापक को तैयार करे न कि अध्याय की विषय वस्तु रटकर। सिर्फ ऐसे सवाल ही नहीं हो जिनके जवाब सिर्फ अध्याय की विषयवस्तु को पढ़कर दिए जा सकें। अर्थात् अध्याय से विकसित दृष्टि और अपने अनुभव के आधार पर जवाब देने के लिए छात्राध्यापक को तैयार करे।

परीक्षा में श्रेणियां निम्नांकित आधार पर दी जाएंगी –

1. सैद्धांतिक परीक्षा के भाग का महायोग 50 प्रतिशत से कम होने पर छात्राध्यापक को उन सभी प्रश्न पत्रों में जितने प्राप्तांक 50 प्रतिशत से कम होंगे पुनः परीक्षा देनी होगी। पुनः उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक विषय में 50 प्रतिशत अंक पृथक–पृथक प्राप्त करना अनिवार्य होगा।
2. पुनः परीक्षा में छात्राध्यापक केवल स्वाध्यायी छात्र के हैसियत से प्रविष्ट हो सकेगा और पूर्व में नियमित छात्राध्यापक के रूप में प्राप्त आन्तरिक मूल्यांकन का लाभ उसे उन विषयों में मिल सकेगा।

व्यावहारिक मूल्यांकन में अनुत्तीर्ण होने की दशा में –

1. यदि कोई प्रशिक्षणार्थी प्रथम वर्ष के प्रथम अवसर के व्यावहारिक मूल्यांकन में अनुत्तीर्ण होता है तो उसे द्वितीय अवसर में पुनः व्यावहारिक मूल्यांकन की सम्पूर्ण प्रक्रिया में सम्मिलित होना पड़ेगा।

डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में पुनः प्रवेश के संबंध में –

1. इस पाठ्यक्रम में किसी कारण से यदि किसी छात्राध्यापक का नाम महाविद्यालय/संस्थान से खारिज किया जाता है तो ऐसे छात्राध्यापकों को केवल एक बार पुनः प्रवेश संबंधित महाविद्यालय/संस्थान दे सकेंगे।
2. इस पाठ्यक्रम के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक परीक्षा में बैठने के लिए न्यूनतम 80 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य होगी। यदि किसी छात्राध्यापक की उपस्थिति इस न्यनूतम उपस्थिति से कम हो तो उस वर्ष उसे परीक्षा में बैठने से रोका जायेगा तथा ऐसे छात्राध्यापक को अगले वर्ष पुनः शुल्क जमा कर इस पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना होगा। अर्थात् यदि प्रथम वर्ष में परीक्षा से डीबार (Debar) होता है तो अगले वर्ष प्रथम वर्ष में

और यदि द्वितीय वर्ष में डीबार (Debar) होता है तो अगले वर्ष द्वितीय वर्ष में उसे पुनः प्रवेश लेना होगा।

3. 80 प्रतिशत से उपस्थिति कम है तो 5 प्रतिशत उपस्थिति प्राचार्य अपने अधिकार से, 7 प्रतिशत सचिव, छ0ग0मा0शि0म0 के अनुमति से तथा 8 प्रतिशत अध्यक्ष, छ0ग0मा0शि0म0 के अनुमति से विद्यार्थी को दिया जा सकेगा।

सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक परीक्षा के संबंध में –

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, विनियम 2014 के नियम 2.1 के अनुसार डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश की तारीख से अधिकतम तीन वर्ष की अवधि में छात्राध्यापकों को इस पाठ्यक्रम को पूरा करने की अनुमति होगी। अर्थात् प्रथम वर्ष के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक परीक्षा में सम्मिलित होकर अनुत्तीर्ण छात्राध्यापकों को भी द्वितीय वर्ष में प्रवेश दिया जायेगा। द्वितीय वर्ष में छात्राध्यापक प्रथम वर्ष के साथ–साथ द्वितीय वर्ष के परीक्षा में बैठेंगे। छात्राध्यापकों को मुख्य परीक्षा व पूरक परीक्षा मिलाकर कुल 6 अवसर में इस पाठ्यक्रम को पूरा करना आवश्यक होगा।

परीक्षा योजना

प्रश्न के स्वरूप (सैद्धांतिक परीक्षा)

पूर्णांक – 80 समय–3 घण्टा

खण्ड	विवरण	पूछे जाने वाले प्रश्नों की संख्या	हल किए जाने वाले प्रश्नों की संख्या	कुल शब्दों में	अंक	कुल अंक
अ	तर्क/कारण से संबंधित प्रश्न	08	06	कम से कम 50 शब्दों में	03	18
ब	समझ से संबंधित प्रश्न	10	06	कम से कम 150 शब्दों में	05	30
स	विश्लेषणात्मक प्रश्न	07	04	कम से कम 250 शब्दों में	08	32
योग		25	16		16	80

1. व्यावहारिक मूल्यांकन – दो समूहो में विभक्त किया गया है –

1.1. शाला अनुभव कार्यक्रम – प्रथम वर्ष आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन संस्थान स्तर पर तथा द्वितीय वर्ष आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन **(छ.ग.मा.शि.मण्डल से नियुक्त बाह्य परीक्षक द्वारा)**

1.2. कम्प्यूटर शिक्षण भाग–एक एवं भाग दो आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन (प्रशिक्षण संस्थान द्वारा)

1.3. कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति भाग–एक एवं भाग दो आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन (प्रशिक्षण संस्थान द्वारा)

1.4. योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, एवं भावात्मक शिक्षा भाग–1 एवं भाग दो आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन (प्रशिक्षण संस्थान द्वारा)

1.5. कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास– भाग–एक एवं भाग दो आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन (प्रशिक्षण संस्थान द्वारा)

टीप–*व्यावहारिक मूल्यांकन के अन्तर्गत केवल शाला अनुभव कार्यक्रम का मूल्यांकन छ.मा.शि.मण्डल से नियुक्त बाह्य परीक्षक द्वारा किया जावेगा तथा शेष व्यावहारिक विषयों –कम्प्यूटर, शिक्षण कला। शिक्षा एवं लोक संस्कृति ।योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, एवं भावात्मक शिक्षा। कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास का आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन संबंधित संस्था के अकादमिक सदस्यों द्वारा सम्पन्न किया जावेगा।*

शाला अनुभव कार्यक्रम का मूल्यांकन –

प्रथम वर्ष में शाला अनुभव कार्यक्रम के अंतर्गत शाला अवलोकन हेतु छात्राध्यापकों के मूल्यांकन की योजना निम्नानुसार होगीः–

मूल्यांकनकर्ता एवं आधार सामाग्री	निर्धारित अंक
1. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के पर्यवेक्षक द्वारा – • प्रधान अध्यापक की राय पर आधारित मूल्यांकन • छात्राध्यापकों के द्वारा 24 दिनों (12 दिवस प्राथमिक व 12 दिवस उच्च प्राथमिक में)के दौरान किए कार्य के अवलोकन के आधार पर • बच्चों, पालकों, शिक्षकों व समुदाय के साथ अंतः क्रिया के आधार पर	कुल अंक 20
2. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान स्तर पर (संस्थान स्तर पर बनी समिति द्वाराः– • छात्राध्यापकों द्वारा 24 दिनों (12 दिवस प्राथमिक व 12 दिवस उच्च प्राथमिक में) के शाला अवलोकन में किए गए अवलोकन एवं कार्यों का प्रस्तुतीकरण। • अभ्यास शाला में किए गए अन्तः क्रिया, खेलकूद संचालन तथा अन्य कार्य	कुल 20 अंक
कुल अंक	कुल अंक–40

मूल्यांकन पत्रक –1

क्र.	मूल्यांकन के बिन्दु	अंक विभाजन	विशेष टीप
1	छात्राध्यापक द्वारा शाला अवलोकन में किए कार्यो की स्वयं द्वारा की गई मानिटरिंग के आधार पर	05	
2	प्रधानाध्यापक द्वारा दिए गए अवलोकन रिपोर्ट के आधार पर	05	
3	समुदाय एवं पालकों व एस.एम.सी. के साथ किए गए कार्य एवं प्रतिवेदन के आधार पर	05	
4	कक्षा व शाला में छात्राध्यापक का व्यवहार एवं भागीदारी तथा बच्चों की समझ के विषय में लिखे गए रिफ्लेक्टिव डायरी तथा ड्राप आउट बच्चों को शाला में लाने हेतु किए गए कार्य के आधार पर	05	
	योग	**20**	

मूल्यांकन पत्रक–2

क्र.	मूल्यांकन के बिन्दु	अंक विभाजन	विशेष टीप
1	छात्राध्यापक द्वारा अपने किए गए कार्य का प्रस्तुतीकरणः	08	
	कार्य की समझ (छात्राध्यापक के शिक्षकीय कार्य)		
	बच्चों के बारे में समझ		
	कक्षा अवलोकन की समीक्षा		
	समुदाय के बारे मे समझ		
2	24 दिन (12 प्राथ+ 12 उच्च प्राथमिक) का शाला अवलोकन प्रतिवेदन	04	
3	प्रधानाध्यापक द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन	04	
4	छात्राध्यापक से सवाल–जवाब	04	
योग		**20**	

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

प्रश्न पत्र – पहला

बाल विकास और सीखना

उद्देश्य–

- बच्चों व बचपन के बारे में आम धारणाओं की समीक्षा कर सकें।
- बच्चों के विकास के शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक व बौद्धिक पहलुओं को समझें।
- सीखना क्या है तथा हम कैसे सीखते हैं, इस पर विचार करें ।
- बच्चों में सोचने की क्षमता का विकास कैसे होता है– सोचने की प्रक्रिया समझें ।
- बालविकास से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों से परिचय हो सके और शिक्षण कार्य में उनकी प्रासंगिकता को देख सके।
- बच्चों का अध्ययन कैसे किया जाता है इसके तरीकों से पहचान बनायें।
- विभिन्न क्षमता व अभिरूचि वाले बच्चों के लिए कक्षा में कैसे जगह बनाएं यह समझें।

बाल विकास और सीखना				
क्र	पाठ/ विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 120	
			अंक	कालखण्ड
1	बच्चों एवं बचपन के बारे में हमारी धारणाओं की समीक्षा	हमारे विचार, बच्चों के साथ काम करने वाले विद्वानों के विचार– गिजुभाई, जॉन होल्ट, ए.एस.नील आदि	9	14
		बच्चों के अधिकार, बचपन के बारे में धारणाएं समाज में कैसे निर्मित होती हैं		
2	बाल विकास परिचय	विकास की अवधारणा विकास की अवस्थाए– गर्भावस्था, शैशवावस्था, प्रारंभिक व उत्तर बाल्यावस्था, किशोरावस्था	15	24
		शारीरिक, संज्ञानात्मक , सामाजिक , संवेगात्मक विकास		
		विकास को प्रभावित करने वाली बातें –प्रकृति एवं पोषण, निरंतरता व अनिरंतरता, प्रारंभिक एवं परवर्ती (बाद के) अनुभव		
		बाल विकास की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि		
		बच्चों का अध्ययन कुछ तरीकों से परिचय		
3.	विकास के पहलू– (क) शारीरिक व गत्यात्मक विकास, शारीरिक नियंत्रण व समन्वयन का विकास	कुछ सामान्य सिद्धांत	17	24
		शरीर के अंगों का अनुपात में बदलाव, ऊँचाई व वजन में वृद्धि, शारीरिक बनावट में बदलाव		
		नियंत्रण का विकास (स्थूल एवं सूक्ष्म)		
		शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाली बातें – पोषण, पर्यावरण के साथ क्रिया		
		संवेगात्मक विकास		

	(ख) संवेगात्मक एवं नैतिक विकास	नैतिक विकास (विद्यालय एवं गृह निर्माण वातावरण, मित्र समूह एवं वयस्कों के साथ संबंध बाल विकास की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि व्यक्तित्व का विकास एवं समाजीकरण		
4.	**सीखना एवं संज्ञान का विकास**	सीखना क्या है और बच्चे कैसे सीखते हैं? विविध धारणाओं की समीक्षा – व्यवहारवादी, संरचनावादी, सामाजिक संकल्पनाएं संज्ञान क्या है? बच्चों की सोच पर जीन पियाजे के विचार ज्ञान का निर्माण के तरीके स्कीमा (Schema) सम्मिलन (Assimilation) समायोजन (Accomodation) व्यवस्थापन (Organization) संतुलनीकरण (Equilibration) वयस्क व्यक्ति की सोच के लक्षण (What is mental operation) शैशव अवस्था में किशोरावस्था तक सोच का विकास व उसकी कड़ियाँ सेसरीमोटर , प्री आपरेशन , क्रांकीट आपरेशन, फार्मल आपरेशन पियाजे के सिद्धातों का शैक्षणिक महत्व लेव वैगोत्सकी रचनावाद निकट विकास क्षेत्र (ZPD) स्केफोल्डिग शिक्षक की भूमिका	17	24
5.	**खेल तथा विकास में खेल का महत्व**	खेल की परिभाषा । खेल का मनोविश्लेशणात्मक दृष्टिकोण। वाय्गोट्सकी ढ़ांचे में खेल का स्थान। खेल का विकास मार्ग। खेल एक प्रमुख गतिविधि। खेल की समृद्वि। विकास में खेल की भूमिका।	11	16
6.	**विशेष आवश्यकता वाले बच्चे**	विशिष्ट बच्चों से अभिप्राय। क्षति,दिव्यांगता एवं अक्षमता। विभिन्नताओं में समानता। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ कार्य ।	11	18

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक
कुछ उदाहरण 1. कम से कम दो बच्चों का पारिवारिक,सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर अध्ययन। 2. किसी एक, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे का सामाजिक संयोजन का अध्ययन। 3. बच्चों के द्वारा खेले जाने वाले खेलों में सहभागी बन विश्लेषण करें जिसमें गत्यात्मक कौशल, खेल के दौरान प्रयोग की गई भाषा ,समूह रचना तथा नियमों को बनाना, पालन करना, जेन्डर व्यवहार, खेल गीत का उल्लेख हो ?

संदर्भ–

- माता पिता के प्रश्न– गिजु भाई
- दिवास्वप्न– गिजु भाई
- समरहिल – ए.एस.नील
- अनारको के आठ दिन–सत्यु
- पिप्पी लंबे मोजे–ऐस्ट्रिक लिंडग्रन
- तोतोचान–तेत्सुको कुरोयानागी
- बच्चे असफल कैसे होते हैं –जॉन होल्ट
- DECE -I VOL-I I & III IGNOU-
- Child development (11th edition) (अनुवादित)-John w Santrock S.K. Mangal
- Child development(6thedition)(अनुवादित)-Elizabeth B Hurlock, Tata Macgrow Hill Publication Co.ltd.2007
- Child development 7th edition (अनुवादित)--Laura E Berk Pearsons & Prentice Hall, New Delhi 2007,
- Educational- Psychology Santrock,
- Child development 2nd edition (अनुवादित)-- Laura E Berk Pearsons & Prentice Hall, New Delhi 2007,
- John W Santrock Child development Tata Mac Graw Hill Pub.Co.ltd. (अनुवादित)-
- विकास में खेल का महत्व & IGNOU
- DECE-3 बच्चों के लिए सेवाएं एवं कार्यक्रम भाग 1 व 2, IGNOU

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
प्रश्न पत्र – दूसरा

ज्ञान, शिक्षाक्रम व शिक्षणशास्त्र

उद्देश्य –

- ज्ञान और शिक्षा के संबंध के सवालों को समझने के लिए जिज्ञासा पैदा करना और उन पर समझ बनाना।
- ज्ञान की प्रकृति को समझना। उनके सृजन, निर्माण ,जाँच और जीवन में स्थान के बारे में समझना।
- ज्ञान,शिक्षाक्रम और शिक्षण शास्त्र के बारे में छात्राध्यापकों के मन में कोई व्यवस्थित विचार का बनना जिससे वे इन सवालों पर अपना मत बना सकें।

	ज्ञान, शिक्षाक्रम व शिक्षण शास्त्र			
क्र.	पाठ / विषयवस्तु के नाम		कुल अंक 80 कालखण्ड 120	
			अंक	कालखण्ड
1	विषय प्रवेश	अपनी स्कूली शिक्षा पर विचार । आदर्शों को पढ़ना। अध्ययन सामग्री – समरहिल, दिवास्वप्न , तोतोचान ,यात्स्नाया पोल्याना। ज्ञान व शिक्षा की एक झलक।	15	20
2	ज्ञान के प्रकार	आम बोलचाल की भाषा में ज्ञान, शब्द और उनके पीछे अवधारणा। कौशल व व्यावहारिक ज्ञान,परिचयात्मक ज्ञान,तथ्यात्मक ज्ञान ,वर्णनात्मक ज्ञान में अन्तर संबंध। कौशल (करने) को तथ्यात्मक ज्ञान मे तब्दील करने की सम्भावनाएँ/आवश्यकता /संबंध । ज्ञान के प्रकारों पर विमर्श का शिक्षा से संबंध।	15	22
3	ज्ञान और प्रमाण	शिक्षा और ज्ञान। ज्ञान और प्रमाण। प्रत्यक्ष/अनुमान /उपमान/शब्द।	10	17
4	ज्ञान की शर्ते	प्लेटो,दकार्त,जॉनलॉक,बर्कले,कांट । ज्ञान की शर्तें।	15	22
5	ज्ञान का स्वरूप	गणित/विज्ञान/सा. विज्ञान/इतिहास/सौन्दर्यबोध/नैतिक समझ/दर्शन की प्रकृति । भाषा /कौशल । विद्यालय के विषय और ज्ञान का स्वरूप।	10	17

6	**ज्ञान और शिक्षाक्रम**	शिक्षाक्रम की जरूरत। शिक्षाक्रम की अवधारणा। पाठ्यक्रम की अवधारणा। शिक्षाक्रम निर्माण की समस्याएं। शिक्षाक्रम के चुनाव के आधार।	15	22

आंतरिक मूल्यांकन   कुल 20 अंक
कुछ उदाहरण 1. मान लीजिए, आप एक स्कूल आरम्भ करने जा रहे हैं। एक स्कूल कहलाने के लिए क्या–क्या होना अनिवार्य है ? क्या नहीं होने से वह स्कूल नहीं होगा ? अपने स्कूल की अवधारणा को तर्क सहित बताएँ। 2. अपने आसपास के समुदाय से कौशलात्मक ज्ञान के तीन उदाहरण चुनिए। उन कौशलों में निपुण एक–एक व्यक्ति के साथ बात करके पता लगाइए कि उन्होंने ये कौशल कैसे अर्जित किए ? उनके अर्जित करने के तरीके और अध्याय में वर्णित अर्जित करने के तरीकों का तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए साथ ही यह भी देखिए कि वह व्यक्ति कौशल सीखने को कितनी बारीकी से बता पाता है और बताने में क्या छूट जाता है ? 3. यदि ज्ञान प्राप्त करने के साधनों में सिर्फ शब्द प्रमाण तक ही सीमित कर दिया जाए तो ज्ञान पर इसका क्या असर पड़ेगा ? हमारे स्कूलों में सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं पर इसका क्या असर पड़ेगा ? ऐसा कौन सा ज्ञान है जो इसके अन्तर्गत नहीं आ पाएगा ? 4. यदि प्रत्येक व्यक्ति यह मानने लगे कि वह जिन चीजों को सत्य मानता है वही सत्य है, दूसरे चाहे कुछ भी मानते रहें। यदि ज्ञान को लेकर हरेक व्यक्ति ऐसा विचार रखने लगे तो इससे क्या समस्याएँ होंगी? 5. अपने रोजमर्रा के जीवन में हम जिन चीजों, विश्वासों, मान्यताओं, विचारों को सही मानते हैं उनकी सूची बनाएं। यदि संदेह की विधि को इन पर लागू करें तो कौन सी चीजें, विश्वास, मान्यताएँ और विचार ज्यादा टिकाऊ होंगे और कौन से ऐसे होंगे जिन्हें सत्य मानने में समस्या महसूस होगी?

संदर्भ–

- दिवास्वप्न – गिजू भाई
- समरहिल – ए.एस.नील
- लियो टॉल्सटॉय की शिक्षाशास्त्रीय रचनाएँ – टॉल्सटॉय
- तोतोचान – तेत्सुको कुरोयानागी
- ज्ञान मीमांसा –प्रो.दयाकृष्ण
- द प्राब्लम्स ऑफ फिलॉसॉफी – बर्ट्रेण्ड रसेल
- दर्शन एक सरल परिचय –प्रो.राजेन्द्र स्वरूप भटनागर
- भारतीय दर्शन भाग 1 एवं भाग 2 – डॉ. राधाकृष्णन
- पाश्चात्य दर्शन भाग 1 एवं भाग 2 प्रो.दयाकृष्ण
- भारतीय दर्शन एक परिचय – दत्त एवं चटर्जी
- फिलॉसॉफी ऑफ वेस्टन फिलॉसॉफी – बर्ट्रेण्ड रसेल
- शिक्षा और समझ – रोहित धनकर
- फिलॉसॉफी ऑफ प्रायमरी एज्जुकेशन – आर.एफ.डियड्रेन
- अनुभववाद – राजेन्द्र प्रसाद
- फिलॉसॉफी ऑफ हयूमन लर्निंग – क्रिस्टोफर
- फिलॉसॉफी ऑफ पॉलिसी मेकिंग – क्रिस्टोफर

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
प्रश्न पत्र – तीसरा

शैक्षिक तकनीकी

उद्देश्य –

- शैक्षिक तकनीकी एवं संप्रेषण के बारे में जान पाएंगे।
- विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग करना सीख पाएंगें ।
- सूचना तकनीकी के उपयोग से अवगत हो सकेंगे ।
- सीखने–सीखाने के विभिन्न तरीकों के बारे में जान पाएंगे।
- समावेशी शिक्षा में आई.सी.टी की भूमिका को समझ पाएंगे।
- मूल्यांकन हेतु शैक्षिक तकनीकी के उपयोग को जान पाएंगें।

शैक्षिक तकनीकी				
क्र	**पाठ/ विषयवस्तु**		**कुल अंक 80 कालखण्ड 120**	
			अंक	कालखण्ड
1	**शैक्षिक तकनीकी एवं संप्रेषण**	1.1. भूमिका 1.1.1. शैक्षिक तकनीकी का अर्थ 1.1.2. शैक्षिक तकनीकी का प्रकार 1.1.3. शैक्षिक तकनीकी की आवश्यकता एवं उपयोग 1.1.4. शैक्षिक तकनीकी का क्षेत्र 1.1.5. शैक्षिक तकनीकी के कार्य 1.1.6. शैक्षिक तकनीकी के सोपान 1.2. संप्रेषण 1.2.1. अवधारणा 1.2.2. संप्रेषण का अर्थ, 1.2.3. संप्रेषण का चक्र 1.2.4. संप्रेषण के प्रकार 1.2.5. संप्रेषण की सीमाएँ 1.2.6. संपेषण की आवश्यकताएं 1.2.7. संप्रेषण के सिद्धांत 1.2.8. संप्रेषण के माध्यम 1.2.9. एडगर डेल का अनुभव शंकु 1.3. शिक्षण –अधिगम के सन्दर्भ में आई.सी.टी. का परिचय 1.3.1. परिचय, उद्देश्य 1.3.2. आई.सी.टी. क्या है?	20	30

		1.3.3. आई.सी.टी.का उपयोग		
2	**सूचना तकनीकी तथा ई–लर्निंग**	2.1. अवधारणा 2.2. सूचना तकनीकी के उपयोग एवं शैक्षिक आवश्यकता 2.3. शिक्षा में सूचना तकनीकी का महत्त्व 2.4. ई–लर्निंग की अवधारणा 2.5. शिक्षा में तकनीकी और शिक्षा की तकनीकी 2.6. शिक्षण विधियॉ पारंपरिक शिक्षण विधियॉ–व्याख्यान विधि,संशोधित व्याख्यान विधि व्याख्यान प्रदर्शन विधि 2.7. नवाचार शिक्षण विधियॉ ह्यूरिस्टिक विधि अन्तःक्रिया विधि खेल–खेल में शिक्षण क्रियाकलाप विधि,कहानी विधि, प्रयोजना विधि,आगमन विधि,निगमन विधि 2.8. जोड़ी दार पद्धति, त्रिपद पद्धति,समस्या समाधान विधि, किम, नोट्स लिखना, माइंडमैप,सारांशीकरण,वेबथीम,अभिनय श्लोक सूत्र,क्वीज,अंत्याक्षरी वाद विवाद,बहुबुद्धि, 5ई–माडल,	20	30
3	**शैक्षिक साधन**	3.1. विभिन्न विषयों के शिक्षण में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी का उपयोग रेडियो, दूरदर्शन, डिस्प्ले बोर्ड, श्वेत या श्यामपट, लपेट फलक, क्लिप बोर्ड, इंटरेक्टिव बोर्ड, कम्प्यूटर, सी.डी.प्लेयर विजुआलाईजर /डाक्यूमेंट कैमरा,ओवर हेड प्रोजेक्टर, डिजिटलकैमरा, मल्टीमिडिया प्रोजेक्टर, मोबाईल 3.2. ऐड्डी माडल 3.3. स्थानीय सामग्री का उपयोग 3.3.1. स्थानीय परिवेश से शिक्षण 3.3.2. क्षेत्र भ्रमण 3.3.3. विद्यालयी भूमि/भवन का शिक्षण में उपयोग 3.3.4. वृक्ष एवं पौधे 3.3.5. स्थानीय जीव 3.3.6. मेले 3.3.7. स्थानीय ऐतिहासिक स्थल एवं	20	30

		स्मारक 3.3.8. कम कीमत वाली वस्तुओं से शिक्षण 3.3.9. कबाड़ से जुगाड़ द्वारा शिक्षण 3.4. **अनुरूपित शिक्षण** – अवधारणा,प्रक्रिया,तत्व ,गुण–दोष 3.4. **दल शिक्षण** – अवधारणा , उद्देश्य , प्रकार, प्रक्रिया , सीमाएँ 3.5. कम्प्यूटर सहायता अधिगम एवं कम्प्यूटर सहायता अनुदेशन 3.5.1. कम्प्यूटर सहायता अधिगम 3.5.2. कम्प्यूटर सहायता अनुदेशन अधिगम 3.6. ऑन लाईन शिक्षा 3.7. वर्चुअल क्लासरूम 3.8. स्मार्ट क्लास		
4	**सीखने – सिखाने में तकनीकी**	4.1.1. पावर पाईन्ट 4.1.2. मल्टीमीटिया 4.1.3. इन्टरनेट 4.1.4. ब्लू टूथ 4.1.5. इन्टरनेट ब्राऊजर 4.1.6. ई–मेल 4.1.7. इलेक्ट्रानिक कामर्स 4.1.8. इन्साइक्लोपीडिया 4.1.9. साइबर क्राइम 4.1.10. चैटिंग 4.2. **समावेशी शिक्षा में आई. सी.टी. की भूमिका** 4.2.1. परिचय 4.2.2. श्रवण संबंधी निर्योग्यताओं के निराकरण हेतु उपकरण 4.2.3. दृष्टि बाधितों के निराकरण हेतु उपकरण 4.2.4. अधिगम संबंधी निर्योग्यताओं के निराकरण हेतु उपकरण 4.3. मूल्यांकन में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग 4.3.1. विद्यार्थियों के अधिगम का मूल्यांकन करने की विभिन्न तकनीकें 4.3.2. मूल्यांकन मे सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के लाभ	20	30

		4.3.3. मूल्यांकन मे सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के उपयोग से हानियॉ 4.3.4. उपचारात्मक शिक्षण मे सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का उपयोग 4.3.4. मूल्यांकन हेतु उपयोग में आने वाले हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर उपकरण		

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक
कुछ उदाहरण • इन्टरनेट की सहायता से पर्यावरण अध्ययन की किसी विषयवस्तु को समझाने के लिए सामग्री एकत्रित करें । • अपना स्वयं का ई–मेल आई डी बनाएं एवं 5 व्यक्तियों को मेल करें । • विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करके पाठ योजना बनाएं एवं शाला अनुभव कार्य{म के दौरान उसका उपयोग करें। • बिना कीमत अथवा कम कीमत वाली वस्तुओं से शिक्षण सामग्री तैयार करें एवं उसकी प्रदर्शनी लगाएं। • किसी एक विषयवस्तु पर पावरपाइंट प्रेजेन्टेशन तैयार करें ।

संदर्भ –

- शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार– डॉ एस.पी.कुलश्रेष्ठ, डॉ. ए.के. कुलश्रेष्ठ
- शिक्षक शिक्षण एवं तकनीकी – डॉ आर.ए.शर्मा , डॉ. शिखा चतुर्वेदी
- शैक्षिक तकनीकी – डॉ. सुमनलता. , डॉ एच.एल.खत्री
- शिक्षा तकनीकी – डॉ आर.ए.शर्मा
- शैक्षिक तकनीकी एव कक्षा – कक्षा प्रबन्ध –डॉ सरोज शर्मा, डॉ नंदिनी गुप्ता
- शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्ध – जे.सी. अग्रवाल
- शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार – विनोद कुमार अत्री
- शैक्षिक तकनीकी के मूल तत्व एवं प्रबन्धन– डॉ गया सिंह
- सूचना संप्रेषण तकनीकी B.S.T.C. (D.EL.ED) पठन सामग्री – प्रथम वर्ष ,राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,उदयपुर

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

प्रश्न पत्र – चौथा

हिन्दी भाषा शिक्षण स्तर–1

उद्देश्य –

- भाषा की इंसान के जीवन में भूमिका को समझ पाना।
- बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं? सीखने की प्रक्रिया को कौन–कौन से घटक प्रभावित करते हैं?
- भाषा सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका क्या है? इन बिन्दुओं पर समझ बनाना।
- भाषा के सामाजिक तथा राजनैतिक पहलुओं को समझना, यह समझना कि क्या–क्या इनके निहितार्थ हैं।
- भाषा में मूल्यांकन का उद्देश्य क्या होना चाहिए और मूल्यांकन करने का क्या तरीका होना चाहिए इस पर अपनी समझ बनाना।

हिन्दी भाषा शिक्षण भाग–1				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 120	
			अंक	कालखण्ड
1	भाषा एवं मानव का संबंध	• बच्चों की भाषा • अपना सिर थपथपाना व पेट को मलना • भाषा : मानव शास्त्रीय दृष्टि में	15	25
2	बच्चों की भाषाई विकास की प्रक्रिया	• बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता–1 • बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता–2 • भाषा सिखाना माने क्या • भाषा व भाषा शिक्षण • बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं : कुदरती जादू या लंबा सफर?	12	15
3	भाषा का सामाजिक एवं राजनैतिक संबंध	• बहुभाषिता, साक्षरता, भाषा–शिक्षण एवं बौद्धिक विकास • भारतीय भाषाएँ : विकासशील समाज में पहचान का माध्यम • भाषा और तौर तरीके • कौन भाषा, कौन बोली	12	15
4	बच्चों में भाषाई क्षमता एवं उनका विकास	• बातें करना • पढ़ना यानि एक सृजनात्मक अनुभव • सही मायनों में आखिर 'पढ़ना' है क्या?	08	13

5	कक्षा में पढ़ना सीखना	• बच्चे पढ़ क्यों नहीं पाते? • पढ़ना कैसे सिखाया जाय? • पढ़ने का आकलन कैसे करें • पढ़ाई पहली कक्षा की • पढ़ना सिखाना	15	25
6	कक्षा में लिखना सीखना	• लिखना – क्या और कैसे? • लिखना सिखाने के उभरते आयाम • लेखन के विविध प्रकार • लिखना–बातचीत	10	14
7	मूल्यांकन / आकलन	• आकलन (NCERT Handbook) • मूल्यांकन (एन.सी.एफ.) • प्राथमिक स्तर पर आकलन की मौजूदा प्रक्रिया • आकलन के तरीके	08	13

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

1. एक से पांच वर्ष के बच्चे भाषा कैसे सीखते है का अध्ययन ।
2. अपने क्षेत्र की स्थानीय कहानियों/गीतों/कविताओं का संकलन कर बच्चों की भाषायी क्षमता के विकास में उनके योगदान का अध्ययन।
3. कक्षा में बच्चों के बीच की भाषा को लिपिबद्ध कर उनका अध्ययन करना।
4. हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण निम्न आधार पर–

   पढ़ना सिखाने के बारे में पुस्तक में अपनाये गये तरीके ।

   लिखना सिखाने के बारे में पुस्तक में अपनाये गये तरीके ।

   भाषायी क्षमता बढ़ाने के लिए पुस्तक में दी गयी गतिविधियाँ।

   कक्षा एक से पांच तक गतिविधियाँ बनाना। जैसे – 'क्या होता है लाल लाल।'

संदर्भ –

- एन्थ्रोपोलॉजी (fifth edition), पापुलर आइडिया एबाउट लग्वैज
- भाषायी अस्मिता व हिन्दी (Language and Identity) रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव
- बच्चे की भाषा और अध्यापक –श्री कृष्ण कुमार अध्याय –1, भाषा और अधिगम , जेम्सब्रिटेन
- भाषा और ज्ञान का निर्माण आर.सी.शर्मा

(i) Psychology Essentials Articulate Mammal Santrock Jean Aichision
(ii) भाषा व अधिगम जेम्स ब्रिटन रिपोर्ट कार्यशाला

- ज्ञान के निर्माण की प्रोसीडिंग –आर.अमृतवल्ली Articulate Mannual जीन एचिनसन
- बहुभाषिता व हिन्दी – रमाकांत अग्निहोत्री

- Language and identity David Crystal
- भारतीय भाषाएं विकासशील समाज में पहचान का माध्यम– अंजनी सिन्हा हिन्दी का सामाजिक संदर्भ (बोली भाषा एवं मानकीकरण)
- Reading of meaning (The Identification fo Meaning – frank Smith)
- पठन सामग्री (ज्ञान की संरचना) Sonika Kawh.K 28-54]
- What is Reading ? Richard C.Andesson & all Reading for Meaning
- The Teaching of reading - BrianThompson)
- पढ़ना सिखाने में शिक्षक की भूमिका –लता पांडे
- NCERT 9–14 पढ़ाई पहली कक्षा की – अक्षय कुमार दीक्षित
- पढ़ना सिखाने की शुरूआत NCERT 1–4 – लता पांडे
- बच्चे पढ़ क्यों नहीं पाते– Frank Smith अनुवाद – सुशील जोशी
- Writing: from chap 11 learning cognistion in the content areas
- Educational Psychology - Jhon W. Santrock IInd Edition 49-61 348-354
- बोलना व लिखना (वाल्स चेफ) CTE 05 – Block 4 Unit 15,16 IGNOU , Emerging trends in teaching writing(unit 12)
- भाषा शिक्षा – डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव

1. पढ़ने सीखने की शुरूआत
2. पढ़ने का आकलन कैसे करें – शरद कुमारी
3. लता पांडे 27–37
4. Reading for meaning (Reading –A Psychoti agaritic guming game- Kenneth S. Goodman 1&13

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

प्रश्न पत्र – पांचवां

ENGLISH LANGUAGE PROFICIENCY

Objectives

- To develop the language skills and knowledge of the student teachers to make them use English fluently.
- To equip student teachers with theoretical and pedagogic perspectives on English as a second language.
- To develop critical awareness of approaches, methods and principles of language learning/acquisition in the student teachers.
- To familiarize the student teachers with different aspects of effective classroom management, procedures and strategies for teaching English.
- To provide hands on experience in developing lesson planning for effective teaching of English.
- To develop or make use of resources and materials for teaching and assessing young learners.

ENGLISH LANGUAGE PROFICIENCY				
UNITS-	**Lesson & Topic Name**		**Total Marks 80**	**Periods -120**
UNIT-1	**ENGLISH IN INDIA**	• Why English in India? • How Learning first language different from learning second language • Challenges of learning/teaching English as a second language • Langauge Acquisition and second Language • Learning	**03**	**05**
UNIT-2	**LEARNING LSRW SKILLS THROUGH THE FOLLOWING LANGUAGE FUNCTIONS**	• Greeting • Taking leave • Enquiring, giving information • Apologizing • Appreciating • Giving directions	**47**	**65**

UNIT-3	**STUDY KILLS**	• Dictionary skills • Note Making • Information transfer • Interpretation of data	**08**	**10**
UNIT-4	**APPROACHES AND METHODS OF SECOND LANGUAGE TEACHING**	• Approaches and methods of teaching English as second language • Recent Developments • Classroom management • The English Language Teacher as an Innovator	**15**	**30**
UNIT-5	**EVALUATION**	• good test items • Preparing test items • analysis and preparation of blue print	**07**	**10**

Internal Assessment	**20 marks**
Internal Assessment will be based on assessment of listening (5 marks), speaking (5 marks) reading aloud (5 marks) writing (5 marks)	

Reference:

Agnihotri R.K. and A.L.Khanna, 1996 English Grammar in Context, Ratna Sagar Publication.

Adrioan Doff, Teacher's workbook – Teah English-Cambridge Teacher Training and Development.

Das Gupta, J. 1970. Language Conflict and National Development : Group Politics and National language Policy in India, p. 43-45)

George Yule, Second Language acquisition/learning – Pg no. 162 to 170 - The study of Language (Third edition)

J.C. Aggarwal, Principles, methods and techniques of teaching, Vikas Publishing House PVT LTD, Second Revised Edition.

Jack C. Richards, Theodore S. Rodgers, Approaches and methods in language teaching: Foundation of Bilingual education and bilingualism, Colin Baker.

Jim Trelease, When to begin read – The new read aloud Handbook

Lorna M. Earl, Assessment as Learning – Using classroom assessment to maximize student learning, Corwin Press, INC.

Mary Spratt., English for the teacher – A language development course –

V. Saraswati, English Language Teaching Principle, Practices Orient Longman

Dianne Larsen – Freeman Technique and Principle in Language Teaching OUP

Jane Willis- Teaching English Through English .

Kamlesh Sadanand & Susheela Punita 2014 - Spoken English – A Foundation Course

Learn English, Teach English: English Skills for Teachers- Ravinarayan Chakrakodi

Padhne ki sanajh – Reading development Cell – NCERT

Reading for meaning – Reading development Cell – NCERT

Robert L. Linn, Norman E. Gronlund, Measurement and Assessment in Teaching, Englih edition, Person Education, Inc.

Rungeen singh, Kitu oges on a holiday – Vishv books

S. nagarajan, 'the decline of English in India', college English, Vol. 43, No. 7, Nov. 1981, Pg 665

Susan B. Neuman and Kathleen Roskos, Nurturing Knowledge.

The TKT Tteaching Knowledge Textbook- Mary Spratt, Ala Pulverness, Melanie Williams- CUP

Brad Decan and Tim Murphy, Kahani sunakar to dekho

IGNOU, CTE, 01, Block 4, Unit 15, pg no. 25-26

IGNOU, CTE, 01, Block 4, Unit 15, Pg 24

Learning Curve – Language Issue – Azim Premji Foundation

NCERT- NCF –2005

Prashant Agrawal, 'Leader Article: Myths about English', The Times of India, Nov 17, 2007

Sanjiv Kaura, 'Language Without barriers', The times of India, Mar 11, 2010

Time to rhyme – A CBT publication – Eklavya

Young India 1919-22, p. 451

Web links:

http:// www.uwsp.edu/education/lwilson/learning/quest2.htm

http:// www. Educationsoasis.com/curriculum/LP/LP resources/lesson objectives.htm#avwww.cbse.nic .in

www.ncert.nic.in

http:// www.improvespokenenglish.org/search/label/Conversation

http:// www.mindmapart.com/energy-saving-mind-map-jane-genovese

http:// www.msu.edu/caplan/drama/tesol2005/situations.doc

http:// www.scribd.com/doc/391505/Paragraph-Writing

http:// www.teflgames.com/why.html- May 28, 2010

www.sendaiedu.com/effectiveuseofthetxtbookhandouthung.doc

www.slideshare.net/wisdom/adaptingalanguagetextbook

en.wikipedia.org/wiki/Children's_literature

http://www.brighthub.com/education/k-12/articles/6211.aspx#ixzzorUR6623j

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
प्रश्न पत्र – छठवां

गणित शिक्षण

उद्देश्य

- गणित की प्रकृति दैनिक जीवन में इस की महत्ता एवं विशेषताओं को समझना।
- गणितीय अवधारणाओं की समझ कैसे विकसित होती है यह समझना।
- पाठ्यक्रम को पूरा करते समय शिक्षक किसी बच्चे को तथा उसके शैक्षिक विकास के चरणों को समझ सकेंगे तथा यह तय कर पाएँगे कि प्राथमिक गणित की विभिन्न अवधारणाओं को किस स्तर पर, किस तरह पढ़ाया जाए, इसे समझना।
- बच्चे कैसे सीखते हैं तथा उनकी गणितीय सोच को विकसित करने के लिए कैसे उनकी मदद की जा सकती है, इसे समझना।
- गणित सीखने में खेलों की भूमिका तथा सीखने में मदद करने वाले अन्य वैकल्पिक तरीकों को समझना।
- अवधारणाओं को सीखने की उपयुक्त रणनीति के साथ, संख्या की अवधारणा, स्थानीय मान, गणितीय संक्रियाएँ तथा स्थान संबंधी अवधारणाओं की विस्तृत चर्चा कर अवधारणाओं को सीखते समय हम जिन समस्याओं से जूझते हैं उन्हें समझने तथा उनके उपचार के तरीकों को समझना।

<table>
<tr><td colspan="5">गणित शिक्षण</td></tr>
<tr><td>क्र.</td><td colspan="2">पाठ/ विषयवस्तु</td><td colspan="2">कुल अंक 80
कालखण्ड 120</td></tr>
<tr><td rowspan="4">1</td><td rowspan="4">बेकसूर गणित</td><td rowspan="2">गणित क्या है, कहाँ से आया है ? चारों ओर गणित – क्या हमारी सभी गतिविधियों में गणित शामिल है?</td><td>अंक</td><td>कालखण्ड</td></tr>
<tr><td rowspan="3">15</td><td rowspan="3">24</td></tr>
<tr><td>सीखने वालों को पहचानें : बच्चों की सोच – बच्चे कैसे सीखते हैं? गणित सीखना – अपना–अपना तरीका – गणित की भाषा – अपने पर भरोसा – लगातार विकास – संक्रियात्मक अवस्थाएँ – हर बच्चा अनूठा।</td></tr>
<tr><td>सीखने वालों के बारे में विचार : सीखने वालों के बारे में विचार – क्या बच्चे बड़ों की नकल करके सीखते हैं? – क्या बच्चे खाली स्लेट हैं? – क्या बच्चे सीखने को उत्सुक हैं? – कुछ और उदाहरण भारतीय गणितज्ञ</td></tr>
</table>

2	जड़ में है : गिनती	गिनना कैसे सिखायें? : गिनती का मतलब – अनुभव से अवधारणा तक गिनती। इकाई, दहाई और आगे ..... : बुनियादी समझ – संक्रियाएँ लगाने में दिक्कतें – स्थानीय मान क्या है?	12	16
3	पहला और आखिरी गणित	जोड़ना और घटाना : जोड़ने का मतलब – घटाने की समझ– जोड़ने और घटाने का संबंध – एल्गोरिदम का इस्तेमाल – अंदाज लगाना गुणा और भाग करना : परिचय–गुणा करने से पहले गुणा की समझ– पहाड़े या तोता रटंत? – गुणा का एल्गोरिदम – भाग का मतलब– भाग का एल्गोरिदम	14	22
4	टुकड़े या पूरे	किस पूर्ण के हिस्से? : परिचय – आधारित यानि कितना ? पूर्ण और पूर्ण के टुकड़े भिन्न की किस्में : परिचय–भिन्न की तस्वीर बनाना–भिन्नों का मापन एवं भिन्नों का पैमाना – जटिल भिन्न दशमलव : परिचय– भिन्नों के लिए दस का पैमाना–दशमलवों का गणित	15	26
5	जगह की समझ	जगह की समझ : बंद आकृतियां–समतल सतह–सम आकृतियां–सममित आकृतियां कोण नापना : कोण क्या होता है? – कोण मापना मापन की शुरूआत : लम्बाई मापना– गैर मानक और मानक इकाइयाँ – मानक इकाइयाँ – उप–इकाइयाँ और मिश्रित इकाइयाँ – क्षेत्रफल का अर्थ क्या है – क्षेत्रफल मापना	14	20
6	बच्चे और गणित	बच्चों की गणित सीखने में मदद : परिचय – बच्चे की पृष्ठभूमि के आधार पर आगे बढ़िए – संबंध जोड़ना – अ–भा–चि–प्र – खेल–खेल में सीखना – सीखने में मददगार अन्य तरीकें – जरूरी नहीं कि दोहराव उबाऊ हो – बच्चे एक दूसरे से सीखते हैं – ग़लतियाँ उपयोगी होती हैं कक्षा का कामकाज – आकड़ो का संकलन –	10	12

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक
कुछ उदाहरण (1) दृश्य एवं अन्तःक्रियात्मक उपकरण/ स्क्रेप बुक (खेल, पजल्स, पहेलियाँ) तैयार करना। (2) प्रश्न–पत्र बनाना, परीक्षा लेना तथा मूल्यांकन करना, बच्चों द्वारा की गई गलतियों का विश्लेषण उनकी समझ को जानने के लिए करना। (3) प्राथमिक कक्षाओं की किसी एक गणित पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण करना। (4) Activity sheets तैयार करना। (5) अपने स्कूल परिसर का नक्शा बनाना, आस–पास के चीजों को संकेतों से व्यक्त करना।

संदर्भ–

- इग्नू की शिक्षक संदर्शिका –AMT-01 खण्ड 1

  AMT-DI

  LMT खण्ड 6

  NCF 2005

  AMT-01 खण्ड1,AMT-01 खण्ड 2,AMT-01 खण्ड 2 ,ईकाई 7 एवं 8

  LMT-01 खण्ड 2 ईकाई 07, AMT-01 खण्ड 4 ईकाई 12

  AMT-01 खण्ड 5 ईकाई 16 , LMT-01 खण्ड 3 ईकाई 08

  LMT-01 खण्ड 1 ईकाई 04

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
प्रश्न पत्र – सातवां

पर्यावरण व पर्यावरण शिक्षण

उद्देश्य

- पर्यावरण से क्या तात्पर्य है, समझ सकें।
- मानव/समाज और पर्यावरण की अन्तःक्रिया के महत्व को समझे।
- बच्चे की समझ पर्यावरण के बारे में क्या हैं ? समझ सकें तथा इसका उपयोग सीखने–सिखाने की प्रक्रिया हेतु करें।
- अवलोकन, पहचानना, जानकारी एकत्र करना, विभेदीकरण तुलना, वर्गीकरण तथा सामान्यीकरण आदि कौशलों के विकास की पर्यावरण अध्ययन तथा विज्ञान शिक्षण कार्य में कैसे जगह बनाएं ? यह समझ सकें।
- पर्यावरण की विविधता और विभिन्नता का सम्मान कर सकें, स्वयं तथा बच्चो को पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनशील बना सकें।
- पर्यावरण अध्ययन हेतु विभिन्न दृष्टिकोणों को समझें तथा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में उनकी प्रासंगिकता को देख पाएं।

गणित शिक्षण				
क्र.	पाठ/ विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 120	
			अंक	कालखण्ड
1	**पर्यावरण को समझना**	• पर्यावरण क्या हैं? • पर्यावरण के घटक – सामाजिक, आर्थिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक • पर्यावरण के घटकों की अंतःक्रियाएं • आज के संदर्भ में पर्यावरण के प्रमुख सरोकार • बच्चों के दृष्टिकोण से पर्यावरण की रोचकता	10	12
2	**पर्यावरण के बारे में बच्चों की समझ**	• बच्चे की समझ • बच्चे का दृष्टिकोण • 5 से 7 व 8 से 14 वर्ष के बच्चों की पर्यावरण के बारे में समझ कैसे पता करें बच्चा पर्यावरण के बारे में क्या – क्या जानता है ?	06	10
3	**बच्चे कैसे सीखते हैं ?**	• बच्चे कैसे सीखते हैं ? • बच्चों की आवाज और अनुभव • सीखने में समाज और वयस्क की भूमिका	05	10

4	**पर्यावरण अध्ययन क्यों पढ़ाएं**	• पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम के सरोकर • अवधारणाओं का बनना • प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन की अवधारणाएं • कौशल क्या है ? • कौशल का विकास	16	20
5	**पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम एक परिदृश्य**	• पर्यावरण अध्ययन का दृष्टिकोण • प्राशिका उपागम (दृष्टिकोण) • छत्तीसगढ़ उपागम (दृष्टिकोण) • एन.सी.ई.आर.टी. (दृष्टिकोण)	11	20
6	**पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण शास्त्र**	• कक्षा–कक्ष में शिक्षण कार्य – चित्रों का पढ़ना, बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों को समझना ➢ दिन – रात और ऋतुओं को समझना ➢ समय नापना ➢ नक्शे पढ़ना और समझना	16	24
7	**पर्यावरण अध्ययन व कक्षा कक्ष की गतिविधियां**	• गतिविधि क्या है ? • प्रयोग सामग्री का संकलन • कक्षा–कक्ष में गतिविधि का आयोजन और संगठन ➢ छोटे–छोटे प्रयोग ➢ चर्चाएं ➢ क्षेत्र भ्रमण ➢ सर्वे ➢ प्रोजेक्ट • पुस्तकालय–सीखने के संसाधन के रूप में • मूल्यांकन • अच्छी कक्षा	16	24

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

1. अपने क्षेत्र की मान्यताओं एवं उनके पीछे छिपे पौराणिक आधारों को संकलित करें।
2. ''विभिन्न ऋतुओं के खान–पान एवं उनके पीछे छिपे ''विज्ञान'' पर प्रायोजना कार्य करें।
3. अपने आसपास के क्षेत्रों में पाई जाने वाली मिटिट्यों के नमूनों का संकलन कर उनकी विभिन्नताओं की पहचान करें एवं उनका महत्व बताएँ।
4. ''मौसम एवं स्वास्थ्य – कैसे करें बचाव'' इस विषय पर प्रायोजना तैयार करें।
5. किसी पर्यावरणीय तथ्य/विषय–वस्तु/समस्या पर मॉडल तैयार कीजिए।
6. विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों का संकलन कर उसके भावों का वर्णन करें।

7. अपने डाइट परिसर में वनस्पति उद्यान का निर्माण कर उसमें लगे पौधों की विस्तृत जानकारी तथा प्रत्येक 15 दिन में परिवर्तन को नोट करें तथा उसकी चर्चा कक्षा में करें।
8. अपने गाँव व मुहल्ले का सर्वे कर पता करें कि पॉलीथीन का उपयोग किन –किन कार्यों के लिए किया जाता है। इनका उपयोग कम करने के उपाय सुझायें।

संदर्भ–

- पाठ्यपुस्तक कक्षा 3–एन.सी.ई.आर.टी, दिल्ली
- मूल्याकंन की संदर्भ पुस्तिका, –एन.सी.ई.आर.टी, दिल्ली
- पर्यावरण अध्ययन संगठन और क्रियान्वयन, –इग्नू
- खोजबीन, –विद्याभवन पब्लिकेशन, उदयपुर
- कुछ करें भाग 1–विद्याभवन पब्लिकेशन, उदयपुर
- प्राशिका– एकलव्य पब्लिकेशन, भोपाल
- संदर्भ –एकलव्य पब्लिकेशन, भोपाल
- ज्ञान–विज्ञान (अंक 18,दिसम्बर 2002)
- पाठ्यपुस्तक कक्षा 3 से 5 –एस.सी.ई.आर.टी, छत्तीसगढ़
- पाठ्यपुस्तक कक्षा 6 से 8– एस.सी.ई.आर.टी, छत्तीसगढ़

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
प्रश्न पत्र – आठवां

शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं विकास

उद्देश्य

- भारतीय शिक्षा तंत्र की संरचना एवं कार्यप्रणाली से परिचित हो सकेंगे।
- शालेय संस्कृति से जुड़े विभिन्न अवयवों पर व्यापक समझ विकसित कर सकेंगे व एक समृद्ध संस्कृति विकसित करने हेतु नवाचार कर सकेंगे।
- नवीन शैक्षिक विचारों व स्थानीय संदर्भों को ध्यान में रखते हुए शालेय प्रभावशीलता की अवधारणा व उससे जुड़े पहलुओं को परिभाषित कर सकेंगे। शालेय प्रभावशीलता के मापदण्ड निर्मित कर सकेंगे व उनको प्राप्त करने के तरीकों पर समझ विकसित कर सकेंगे। शालेय प्रभावशीलता एवं शालेय संस्कृति के अंतर्संबंधों को समझ सकेंगे।
- नवीन शैक्षिक विचारों के अनुरूप बदलाव हेतु शाला में समृद्ध संस्कृति के निर्माण एवं शाला प्रभावशीलता के मापदण्डों को प्राप्त करने हेतु आवश्यक नेतृत्व एवं प्रबंधन के कौशलों पर समझ विकसित कर सकेंगे।
- शाला एवं समुदाय के अंतर्संबंधों को समझ सकेंगे। विद्यालय विकास की अवधारणा समझ सकेंगे व विद्यालय विकास योजना बना सकेंगे।

शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं विकास				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 120	
			अंक	कालखण्ड
1	विद्यालय की संकल्पना परिचय	विद्यालय की आवश्यकता एवं उद्देश्य 1.1. विद्यालय की संकल्पना – एक अधिगम केन्द्र के रूप में 1.2. विद्यालय के आधार 1.3. प्रभावी विद्यालय की विशेषता 1.4. विद्यालय प्रबंधन 1.5. कल्याणकारी योजनाएं 1.6. विद्यालय एक सामाजिक संस्था के रूप में	20	30
2	शाला की प्रभावशीलता से आशय एवं उसका आकलन	2.1. संवैधानिक प्रावधान 2.2. शिक्षा का क्षेत्राधिकार 2.3. शिक्षा के क्षेत्र में केन्द्र सरकार की भूमिका 2.4. राज्य विधानसभा एवं मंत्रालय की भूमिका 2.5. राज्य की शिक्षा व्यवस्थाए 2.6. विद्यालयी शिक्षा विकास का ढ़ांचा 2.7. शिक्षा संबंधी विभिन्न प्रशासनिक सहयोगीसंस्थाएँ	15	20

3	विद्यालय के प्रकार– परिचय, उद्देश्य, विषय वस्तु	3.1. विद्यालय की संरचना 3.2. केन्द्र सरकार द्वारा संचालित विद्यालय 3.3. राज्य सरकार द्वारा संचालित विद्यालय 3.4. निजी विद्यालय 3.5. विशिष्ट विद्यालय	10	20
4	विद्यालय संस्कृति और परिवेश – परिचय, उद्देश्य, विषय वस्तु	4.1. विद्यालयों में बच्चों को सामान्य एवं श्रेष्ठ श्रेणियों में वर्गीकृत करना। 4.2. विद्यालयी प्रवृत्तियां और अनुशासन 4.3. विद्यालय परिवेश और मूलभूत संकेतक	15	20
5	शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन– परिचय, उद्देश्य, विषय वस्तु	5.1. प्रशासनिक नेतृत्व 5.2. टीम नेतृत्व – टीम तैयार करना एवं टीम में कार्य करना, अकादमिक नेतृत्व लीडरशीप (विषयगत क्षेत्र में नेतृत्व) 5.3. शालेय शिक्षा में परिवर्तन लाने हेतु नेतृत्व 5.4. शालेय संस्कृति में परिवर्तन प्रबंधन 5.5. संस्था प्रमुख की भूमिका 5.6. R.T.E. के परिप्रेक्ष्य में शाला प्रबंधन	20	30

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण –

- संस्था प्रमुख की भूमिका।
- सहयोगी संगठन से अंतःक्रिया।
- शाला विकास की योजना बनाना।
- शाला सुविधाओं की सुलभता सुनिश्चित करने हेतु शालाओं में किए गये नवाचारों का अध्ययन।
- शाला प्रबंधन में लोकतांत्रिक प्रक्रियाएँ–बाल पंचायत/बाल संसद इत्यादि।
- विभिन्न विद्यालयों की शालेय संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन।
- शालेय संस्कृति और शिक्षा की गुणवत्ता में अंतर्संबंधों का अध्ययन।
- शाला से समुदाय की अपेक्षाएँ एवं अपेक्षानुसार शाला में किए जा रहे प्रयासों का अध्ययन।

संदर्भ –

- Sood Neelam - Management of School Education in India, Delhi: APH Publishing House, 2003 (NIEPA-2003)
- Earley Peter and Dick Weindling-Understanding School Leadership, Sage Publication India Pvt. Ltd. , 2004
- Michael Fullan - Education Leadership, Jossey Bass Publisher, 2006
- एस. मजूमदार – अधो संरचना एवं शिक्षा प्रशासन।
- बत्रा, एस.(2003) – शालेय सहयोग के लिये शाला निरीक्षण।
- आचार्य महेन्द्र देव – विद्यालय प्रबंध, नई दिल्ली राष्ट्रवाणी प्रकाशन, (2005)
- अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय प्रकाशन – लर्निंग कर्व (सितम्बर 2012) हिंदी अंक 04 – स्कूल नेतृत्व।
- Webliogra http://azimpremjifoundation.org/pdf/LCSchool_LshipHINDI.pdf

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
प्रश्न पत्र – नवां

विषय – आधुनिक विश्व के संदर्भ में भारतीय शिक्षा

उद्देश्य–

- आधुनिक विश्व की तीन प्रमुख प्रक्रियायें जिन्होंने सार्वजनिक शिक्षा के स्वरूप को निर्धारित किया है –कृषि, औद्योगीकरण, राज्य एवं राष्ट्र की स्थापना व लोकतंत्र। इन अवधारणाओं और शिक्षा पर उनके प्रभाव को समझना।
- शाला का संस्थागत स्वरूप शाला प्रबंधन और शिक्षकों को उनके महत्व को समझने में समर्थ बनाना।
- आधुनिक शालाओं के वास्तविक रूप ने सामाजिक असमानता को किस हद तक दूर किया ? बच्चों की सृजनात्मकता का विकास तथा मानवीय व लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा दे पाने की योग्यता की समीक्षा करना।
- स्वतंत्र भारत में शिक्षा की चुनौतियां, इनका सामना करने के लिए संसाधन व तरीकों तथा प्रयासों व उपलब्धियों की समीक्षा करना। (इस संदर्भ में अपनाई गई विभिन्न नीतियों व कार्यक्रमों की समीक्षा करना)
- भारत में अपनाए गये वैकल्पिक शैक्षणिक प्रयोगों की समीक्षा करना।

आधुनिक विश्व के संदर्भ में भारतीय शिक्षा				
इकाई क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 80	कालखण्ड 90
			अंक	कालखण्ड
01	आधुनिक विश्व की विशेषताएं	• आधुनिक विश्व और शालेय शिक्षा • आधुनिक विश्व में कृषि • औद्योगिक उत्पादन	15	17
02	राष्ट्रवाद	• राष्ट्रवाद • लोकतंत्र क्या? • लोकतंत्र क्यों? • वैश्वीकरण और शिक्षा	15	17
03	आधुनिक विश्व और शाला का स्वरूप	• सार्वजनिक स्कूली शिक्षा का विकास • सबके लिए शिक्षा –कैसी शिक्षा ?	15	17
04	स्वतंत्र भारत में शिक्षा से अपेक्षाएं और शिक्षा नीति	• विकासोन्मुखी भारत में शिक्षा की भूमिका • स्वतंत्र भारत में शिक्षा : 1947–1964 • कोठारी आयोग की सिफारिश और कियान्वयन 1964–1986 • राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986–1992 • बच्चों को नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का	15	17

		अधिकार		
05	**शाला का संस्थागत स्वरूप**	• अच्छी शाला की कल्पना • भारत में स्कूल शिक्षा का ढांचा • शालाओं के प्रकार और सार्वभौमिक शिक्षा की चुनौती • शाला प्रबंधन में सामुदायिक सहभागिता • कक्षा का ढांचा कितना उचित • लोकतांत्रिक विद्यालय • अध्यापक और समाज	20	22

संदर्भ –

1- राजनैतिक सिद्धान्त, कक्षा 11वीं–एन.सी.ई.आर.टी द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तक, नई दिल्ली

2- लोकतांत्रिक राजनीति कक्षा 9–एन.सी.ई.आर.टी द्वारा प्रकाशित राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तक, नई दिल्ली

3- लोकतांत्रिक विद्यालय (मूल पुस्तक– डेमोक्रेटिक स्कूल)–सम्पादन डब्ल्यू. एपल व जेम्स ए. वीन, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल (म.प्र.)

4- 'शिक्षा का समाजशास्त्रीय संदर्भ, (ए.आर.कामथ का लेख)–सम्पादक–सुरेश शुक्ल और कृष्ण कुमार ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, नई दिल्ली

5- 'भारत की शिक्षा व्यवस्था–विश्वभारती प्रकाशन, नई दिल्ली

6- 'समग्र नई तालीम/सम्पादन–शेखर–दत्त प्रकाशक– नयी तालीम समिति, आश्रम सेवाग्राम वर्धा (महाराष्ट्र) एवं गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट नई दिल्ली

7- 'शिक्षा विमर्श' (त्रैमासिक पत्रिका) अंक–मई 98, प्रकाशन–दिगन्तर खेलकूद समिति, जयपुर (राजस्थान)

8- 'भारत का राजपत्र' असाधारण, भाग – 2, खण्ड 1 प्राधिकार से प्रकाशित नई दिल्ली वृहस्पतिवार, अगस्त 27, 2009/भाद्र 5, 1931, विधि एवं न्याय मंत्रालय, बच्चों की निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009

9- 'प्राशिका/एकलव्य का प्राथमिक शिक्षा में अभिनव प्रयोग–रत्न सागर प्रा.लि. द्वारा प्रकाशित।

10-राज समाज और शिक्षा–कृष्णकुमार, राजकमल प्रकाशन 2006, नई दिल्ली

11-'खतरा स्कूल' (मूल पुस्तक–डेंजर स्कूल)–विनोद रैना, प्रकाशक–भारत ज्ञान विज्ञान समिति

12-Education com and after, J.P.Naik

13-Short history of education in India, J.P.Naik

14-समरहिल–ए. एस. नील., एकलव्य प्रकाशन, भोपाल, (म.प्र.)

15-असफल स्कूल–जॉन होल्ट, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल, (म.प्र.)

16-रविन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन–ग्रंथ शिल्पी, प्रा. लि. नई दिल्ली

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
प्रश्न पत्र – दसवां

विषय – सामाजिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम

उद्देश्य–

- बच्चों व बचपन के बारे में अवधारणाओं की समीक्षा कर पाएंगे।
- संज्ञानात्मकता क्या है, बच्चे कैसे सीखते हैं, इस पर विचार कर पाएंगे।
- कक्षा कक्ष/विद्यालय परिस्थितियों में बच्चों के सीखने के तरीके और उनकी प्रकृति को समझने में शिक्षकों की सहायता करना।
- तर्क करने, विमर्श करने तथा अधिगम प्रक्रिया और शिक्षा शास्त्रीय आचरण की संकल्पनात्मक समझ के लिए शिक्षकों की दक्षताओं का विकास करना।
- बच्चों के अधिगम के प्रभावी सरलीकरण के लिये उपयुक्त तरीकों एवं रणनीतियों को चुनने और प्रयोग करने के लिये शिक्षकों को समर्थ बनाना।
- अधिगम की विभिन्न प्रक्रियाओं का मूल्यांकन करने तथा उनको कक्षागत अधिगम की प्रोन्नति में प्रभावी प्रयोग करने में समर्थ बनाने के लिये शिक्षकों को स्वायत्त करना।
- परिणाम मूलक लक्ष्य की प्राप्ति करने में शिक्षकों को सक्षम बनाना।

<table>
<tr><th colspan="5">सामाजिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम</th></tr>
<tr><th>क्र</th><th colspan="2">पाठ/ विषयवस्तु</th><th colspan="2">कुल अंक 80
कालखण्ड 90</th></tr>
<tr><td rowspan="2">01</td><td rowspan="2">शिक्षा और ज्ञान विविध परिपेक्ष्यों की समझ</td><td rowspan="2">▪ शिक्षा की अवधारणात्मक समझ –
शिक्षा और समाज
शिक्षा के प्रकार
▪ शिक्षा के आधारों की समझ –
शिक्षा के आधार के रूप में मनोविज्ञान
शिक्षा के आधार के रूप में समाजशास्त्र
शिक्षा के दार्शनिक आधार
शिक्षा के आधार के रूप में इतिहास
शिक्षा के उद्देश्यों एवं मूल्यों की समझ
विद्यालय में शिक्षा की प्रकृति
▪ ज्ञान की अवधारणात्मक समझ –
ज्ञान की अवधारणा से संबंधित दार्शनिक परिप्रेक्ष्यों की समझ
ज्ञान के विविध स्वरूप एवं अर्जन के तरीके</td><td>अंक</td><td>कालखण्ड</td></tr>
<tr><td>08</td><td>09</td></tr>
</table>

		▪ समेकन तथा सीखने–सिखाने में सहयोगी ई–संसाधन।		
02	बचपन और सामाजीकरण :–	▪ बच्चे तथा बचपन की समझ :– सामाजिक–सांस्कृतिक अवधारणा ऐतिहासिक समझ ▪ समाजीकरण की समझ :– समाजीकरण की अवधारणा :– विभिन्न पहलुओं से परिचय बच्चों का समाजीकरण : प्राथमिक एवं परवर्ती चरण के विभिन्न कारकों से परिचय	08	09
03	शिक्षा विद्यालय तथा समाज–अन्तर संबंधी पड़ताल :–	▪ विविधता, असमानता तथा वंचना – अंतर संबंधी पड़ताल :– शिक्षा का सामाजिक संदर्भ शिक्षा का सामाजिक सशक्तिकरण समाज की रचना एवं स्वरूप व्यक्ति और समाज का सम्बन्ध बालक का सामाजीकरण समाज और विद्यालय विभिन्न सामाजिक इकाइयाँ शिक्षा के लिए उत्तरदायी । विद्यालयों एवं समाज के सहयोग की आवश्यकता	08	09
04	विद्यालय के शुरुआती समय के दौरान अधिगम एवं शिक्षण :–	▪ अधिगम प्रक्रिया ▪ अधिगम की अवधारणा एवं प्रक्रिया ▪ बच्चा कैसे सीखता है ▪ शिक्षण की प्रक्रिया	08	09
05	शिक्षण और अधिगम की विधियाँ :–	▪ शिक्षण और अधिगम की प्रभावकारी विधियाँ ▪ अनुदेशात्मक विधियाँ ▪ विद्यार्थी केन्द्रित विधियाँ	08	09
06	शिक्षार्थी और अधिगम केंद्रित उपागम :–	▪ अधिगम उपागम ▪ कियात्मक आधारित उपागम	08	09
07	अधिगम शिक्षण अधिगम का प्रबंधन कक्षा–कक्ष	▪ अधिगम परिस्थितियों का प्रबंधन ▪ अधिगम और शिक्षण के लिये समय और स्थान	08	09

	की प्रक्रिया का प्रबंध :—	का प्रबंधन ▪ प्रोत्साहन और अनुशासन के लिये प्रबंधन ▪ एक प्रबंधक के रुप में शिक्षक की भूमिका		
08	सुविधावंचित शिक्षार्थियो हेतु संदर्भित अधिगम प्रक्रियाएँ या सुविधा वंचित शिक्षार्थियों हेतु अधिगम प्रक्रियाओं को संदर्भित करना	▪ अधिगम के सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ ▪ सुविधावंचित बच्चों की शिक्षा ▪ सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में जनजाति बच्चों की शिक्षा	08	09
09	निर्धारण तथा मूल्यांकन के आधार :—	▪ शिक्षार्थियों की प्रगति का आकलन ▪ आकलन की प्रक्रिया ▪ अधिगम एवं आकलन ।	08	09
10	भारतीय शिक्षा चिंतक :—	▪ रवीन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक दर्शन ▪ महर्षि अरविन्द का शैक्षिक दर्शन ▪ महात्मा गाँधी का शैक्षिक दर्शन ▪ स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन	08	09

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक
कुछ उदाहरण • अपने गांव की सामाजिक, सांस्कृतिक विविधता का विश्लेषणात्मक अध्ययन कीजिये। • अर्थपूर्ण अधिगम बनाने और ज्ञान के निर्माण के लिये शिक्षण के बीच संबंधों का परीक्षण किस प्रकार करेंगे। • कक्षा कक्ष शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अनुदेशात्मक विधियों एवं विद्यार्थी अनुकुल विधियों में से आप किस विधि का प्रयोग करना चाहेंगे ? और क्यों ? स्पष्ट कीजिये। • पूर्व माध्यमिक विद्यालय के एक विषय से उचित उदाहरण प्रस्तुत करके विशेषताओं की व्याख्या कीजिये। इस उपागम के लाभ व सीमाओं का वर्णन करें। • अधिगम के आकलन तथा अधिगम के लिये आकलन में अन्तर स्पष्ट कीजिये।

1. **संदर्भ** :—

- पुस्तक — विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा
- लेखक — गुरुसरनदास त्यागी
- लेख — डॉ. प्रवीण कुमार तिवारी, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र, विद्या शाखा, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का लेख।
- दिल्ली विश्वविद्याालय के एजुकेशन डिपार्टमेंट में प्रोफेसर नमिता रंगनाथ की किताब 'द प्राइमरी स्कूल चाइल्ड' का हिन्दी अनुवाद।
- R.F. मुक्त ज्ञान कोश विकिपीडिया।
- NIOS डी.एल.एड. पाठ्यक्रम।
- SCERT RAIPUR D.ED पुराना पाठ्यक्रम।
- SCERT RAIPUR D.ED प्रथम वर्ष नवीन पाठ्यक्रम।
- IGNOU डी.एल.एड. पाठ्यक्रम नई दिल्ली।

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
प्रश्न पत्र – ग्यारहवां

विषय – विविधता ,समावेशी शिक्षा व जेण्डर

उद्देश्य–

- अपने आस पास की विविधता एवं समानता की समझ का विकास करना।
- अपने आस पास की विविधताओं का चिन्हांकन कर आने वाली समस्याओं की पहचान एवं निदान कर पाना।
- अपने आस पास की विविधता एवं समानता की समझ कर अपने व्यवहार में अभिव्यक्त कर पाना।

विविधता,समावेशी शिक्षा एवं जेण्डर			
पाठ / विषयवस्तु		**कुल अंक 80 कालखण्ड 90**	
खंड 'अ'' समाज में विविधता	**01.समाज में विविधता और समानता** ○ विविधता से आशय ○ दोस्ती करना ○ जाति व्यवस्था असमानता का एक अन्य रूप ○ भारत में विविधता ○ हम विविधता को कैसे समझें? ○ भौगोलिक स्थितियां विविधता का एक कारक ○ विविधता में एकता	अंक	कालखण्ड
	2.विविधता और भेदभाव ○ पूर्वाग्रह ○ लड़के और लड़की में भेदभाव ○ रुढ़िबद्ध धारणाओं की समझ ○ असमानता एवं भेदभाव ○ समाज में भेदभाव का सामना ○ समानता के लिए संघर्ष	20	30
	3. विविधता : समाज और विद्यालय में एक महत्वपूर्ण स्रोत विविधता को पाटने में बच्चों की भागीदारी – भाग I – छोटे विद्यालय में आरंभ भाग II – वृहत या अपेक्षाकृत बड़े विन्यासों		

	में भिन्नताओं को मान्यता भाग III – शिक्षण विधि द्वारा भिन्नता को संभालना तथा बच्चों की भागीदारी		
खंड ''ब'' **शैक्षिक व्यव्स्था में समावेश**	**4. शैक्षिक व्यव्स्था में समावेशः विशेष आवश्यकता के बच्चे के संदर्भ में** • समावेशन की अवधारणा • NCF-2005, NCFTE-2009 में समावेशी शिक्षा • शैक्षिक व्यवस्था में समावेशन • समावेशी शिक्षा की आवश्यकता • विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति नजरिया • समावेशन प्रोत्साहन के तरीके **5. विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, वर्गीकरण, प्रकार, पहचान व शिक्षा** • बच्चों का सामान्य वर्गीकरण (पहचान, कारण, शिक्षा) • निःशक्त जन अधिनियम के आधार पर विशेष आवश्यकता /दिव्यांगता के प्रकार **6. समावेशन के अवसर व संभावनाएं** • समावेशी शिक्षा के मायने • शिक्षा में समावेशन चुनौती व समाधान **7. संसाधन, प्रोत्साहन, योजनाएँ व अनुशंसाएँ** • दिव्यांग बच्चों के लिए बाधारहित वातावरण का निर्माण • CWSN बच्चों हेतु संसाधन • दिव्यांगता एवं शिक्षण सामग्री • मूल्यांकन • कानूनी प्रावधान एवं सुविधाएं • दिव्यांग बच्चे एवं खेलकूद • पुनर्वास	30	30
खंड ''स'' **जेण्डर समझ एवं विकास**	**8. जेण्डर : अवधारणा, महिला, पुरूष थर्ड जेण्डर** • जेण्डर का अर्थ • जेण्डरीकरण • सेक्स और जेण्डर में अन्तर	30	30

	• सामाजिक लिंग–प्राकृतिक लिंग • पहनावा, गुण व विशेषताएं • भूमिकाएं एवं जिम्मेदारियां • लैंगिक अन्तर एवं जैविकीय सत्य • औरतों के बारे में फैलाई गई अफवाहें • सामाजिकरण एवं सालैंगीकरण • सामाजिककरण की प्रक्रिया • तृतीय लिंग अथवा ट्रांसजेण्डर		
	9. मातृ एवं पितृ सत्तात्मक समाज में चुनौतियाँ • पितृसत्ता क्या हैं? • पितृसत्ता की पहचान • पितृसत्ता व्यवस्था में नियंत्रण के क्षेत्र • पितृसत्तात्मक व्यवस्था और विभिन्न संस्थाएँ • मातृसत्तात्मक व्यवस्था		
	10. संसाधन, प्रोत्साहन, योजनाएँ व अनुशंसाएँ ▪ बालिकाओं की शिक्षा हेतु किए गए योगदान • प्रथम स्कूल प्रथम अध्यापिका • शिक्षा एक हथियार		

संदर्भ –

- शाला और समुदाय SCERT , (D.ED) SCERT C.G. 2012
- विविधता समावेशित शिक्षा और जेण्डर–डॉ.सविता शर्मा SHRI VINOD PUSTAK MANDIR 2016
  - समावेशी शिक्षा एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे – राज्य शिक्षा संस्थान इलाहाबाद (यू.पी.)
- शिक्षा निर्देशन व परामर्श –BTC तृतीय सेमेस्टर।
- समावेशी शिक्षा संदर्शिका

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
प्रश्न पत्र –बारहवां

विषय – हिन्दी भाषा शिक्षण स्तर –2

उद्देश्य–

- हिन्दी भाषा की संरचना के विभिन्न पहलूओं की समझ बनाना।
- सोचने और मौलिक चिंतन की प्रवृत्ति का विकास एवं उन विचारों को आत्मविश्वास पूर्वक अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।
- कल्पनाशक्ति, विस्मयबोध, कोतूहल, जिज्ञासा, तर्क एवं सृजनशीलता का विकास करना।
- आनन्द व उत्साह पूर्वक अध्ययन–अध्यापन की प्रवृत्ति का विकास करना।
- बाल साहित्य पढ़ने व उसके विभिन्न पहलूओं को समझ पाने के लिए प्रेरित करना।
- साहित्य एवं साहित्यिक विधाओं से परिचय एवं समझ विकसित करना।
- भाषा एवं विचार के सम्बन्ध को समझना।
- कक्षा–कक्ष में भाषा सीखने–सिखाने के महत्व को समझना।
- पुस्तक–केन्द्रित व रटन्त प्रणाली से हटकर स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करना।

भाषा (हिन्दी) व भाषा शिक्षण				
इकाई क्र	**पाठ / विषयवस्तु**		**कुल अंक 80 कालखण्ड 90**	
			अंक	कालखण्ड
01	**बच्चों में भाषा का विकास**	• भाषा शिक्षण का वर्तमान परिदृश्य : कुछ प्रचलित मान्यताएँ : • बालक की मातृभाषा एवं भाषाई क्षमता • भाषा शिक्षण के उद्देश्य • भाषा की कक्षा कैसी हो?	20	18
02	**पुस्तकालय एवं बाल साहित्य**	• पुस्तकालय का उपयोग क्यों व कैसे • कक्षा में अन्य पुस्तकें • कहानी कथन कौशल • बाल साहित्य • क्या–क्या हो बच्चों की एक किताब में • संकलित बात साहित्य एवं गतिविधियाँ	15	20
03	**साहित्य की अनुभूति**	• **साहित्य से हम क्या समझते हैं?** • **साहित्य की विभिन्न विधाएँ** – एक टोकरी–भर मिट्टी (कहानी) – उदात्त संगीत–मुक्तक (कविता) – पिस्ते बादाम (कहानी) – दूँगी फूल कनेर के (कविता) – प्रायश्चित (कहानी)	18	20

		– गुलेलबाज लड़का (कहानी)		
04	भाषा व विचार – व्यक्तित्व विकास में भाषा की भूमिका	• भाषा व विचार • भाषा और विचार का संबंध • भाषा व्यक्ति के लिए क्यों आवश्यक है? • भाषा का सीखने–सिखाने से संबंध	12	14
05	हिन्दी भाषा व उसका व्याकरण	हिन्दी भाषा व उसका व्याकरण	15	18

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- प्राथमिक कक्षाओं में भाषा क्यों पढ़ाई जाती है? का अध्ययन। (टीप :– छात्राध्यापक अपने शिक्षकों, साथियों एवं प्रथम वर्ष के छात्राध्यापकों से चर्चा करें।)
- अपने क्षेत्र के स्थानीय बाल साहित्य/गीत/कविता/कहानियों/कथाओं का संकलन कर बच्चों की भाषाई क्षमता के विकास में उनके योगदान का अध्ययन करें।
- प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को कहानी और कविता क्यों पढ़ाते हैं इस पर प्राथमिक शिक्षकों से बातचीत कर विश्लेषण तैयार करना।
- चित्रों के माध्यम से प्राथमिक कक्षा के बच्चे से कहानी का निर्माण करवाकर उसका विश्लेषण कर प्रतिवेदन तैयार करें।
- प्राथमिक शाला के किसी एक कक्षा के बच्चों के साथ संवाद करने हेतु आप क्या–क्या करेंगे। इस पूरी प्रकिया को लिपिबद्ध कर प्रस्तुत करें।
- (टीप :– इकाई 3 के ''मुझे क्या मालूम हुआ'' लेख इसका एक उदाहरण है इसी तरह आप बच्चों के साथ कार्य करें।)
- विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, किताबों आदि में प्रकाशित बालकहानी/कविता/नाटक/चित्रों/ खेल/कथा का संकलन करें। इसका उपयोग अपनी कक्षा के बच्चों के सीखने–सिखाने में कर इस पर प्रतिवेदन तैयार करें।

संदर्भ –

- एक टोकरी भर मिट्टी–कहानी – पं. माधवराव सप्रे ।
- उदात्त संगीत –मुक्तक – डॉ बलदेव प्रसाद मिश्र
- पुस्तक के मायने – डॉ. हृदयकांत दीवान, बच्चों की भाषा क्षमता –हृदयकान्त दीवान, विद्याभवन सोसायटी, कक्षा में दीगर किताबें –शहनाज. डी.के.(खोजबीन अंक 5)
- कुछ कहानियॉ कविताएँ, पहेलियॉ व उन पर गतिविधियॉ – आकलन स्त्रोत पुस्तिका, एन.सी.ई. आर.टी व एकलव्य प्रकाशन
- पिस्ते बादाम – इंदिरा वासवानी, अनुवाद – मोतीलाल जोतवाणी
- तोंबा – शिजगुममयुम, अनुवाद – नीलवीर शास्त्री।
- कहानी सुनाने का हुनर – प्रो. कृष्णकुमार
- दूंगी फूल कनेर के – गंगा प्रसाद ।

- प्रायश्चित – भगवती शरण वर्मा।
- गुलेलबाज लड़का – भीष्म साहनी
- पापा खो गए – बसंत, कक्षा 7 हिन्दी एन.सी.ई.आर.टी की पाठ्यपुस्तक, दादाजी – संकलित
- जो बीत गई – हरिवंश राय बच्चन।
- छोटा जादूगर –जयशंकर प्रसाद
- पिता के पत्र पुत्री के नाम – जवाहर लाल नेहरू
- चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय –हिन्दी पाठ्यपुस्तक कक्षा......... छत्तीसगढ़
- नमक का दारोगा– मुंशी प्रेमचंद।
- छात्र की परीक्षा रविन्द्रनाथ टैगोर का बाल साहित्य
- तू जिन्दा है तो...... जवाब दर सवाल, एकलव्य
- विद्यार्थी की आत्मकथा ((नए निबंध,) श्यामजी गोकुल वर्मा विद्या विहार,नई दिल्ली
- प्रोपेगैंडा (आधुनिक युग का शक्तिशाली अस्त्र) बाबू गुलाबराय (किताबघर)
- भाषा शिक्षण के उद्देश्य –एन.सी.ई.आर.टी

1. भाषा की कक्षा के कुछ उदाहरण सक्रिय लिखित माहौल विकसित करना – कीर्ति जयराम (संदर्भ एकलव्य)
2. मुझे क्या मालूम हुआ – लक्ष्मी नारायण, संदर्भ एकलव्य

- भाषा और विचार भाग 1 – अनुवाद – सुनीता मिश्रा
- भाषा और विचार भाग 2 – अनुवाद – पुष्पराज राणावत
- भाषा इंसानों के लिए क्यों जरूरी है और इसका विकास कैसे होता है ? – वी.बी. ई. आर.सी. ,उदयपुर, (राजस्थान)
- भाषा व समझ भाग 1 व 2 – रोहित धनकर ।
- हिन्दी शिक्षण – रमण बिहारी लाल
- हिन्दी शिक्षण – डॉ. एन.आर. शर्मा।
- स्वतंत्रोत्तर हिन्दी बाल साहित्य – डॉ. कामना सिंह
- वाक्य संरचना –बी.आर.साहु

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
प्रश्न पत्र – तेरहवां

SUBJECT - ENGLISH (Proficiency and Pedagogy)

Objectives -

- To develop the language skills and knowledge (about the language) of the student teachers so that they can use English fluently.
- To equip student teachers with skills to put into practice theoretical and pedagogical perspectives on English as a second language. Student teachers will be able to practice theory contextually and innovatively.
- To develop critical awareness of approaches, methods and principles of language learning/acquisition in the student teachers.
- To familiarize the student teachers with different aspects of effective classroom management, procedures and strategies for teaching English.
- To provide hands on experience in developing lesson planning for effective teaching of English.
- To develop or make use of resources and materials for teaching and assessing young learners.
- To conduct classroom researches to handle classroom challenges.

ENGLISH (Proficiency and Pedagogy)				
इकाई क्रमांक	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक **40** कालखण्ड **45**	
			अंक	कालखण्ड
UNIT-1	**CONTEXTS OF ENGLISH LANGUAGE LEARNING (SECOND LANGUAGE)**	• Indicators of Learning (Learning Outcomes) • Textbook Analysis • Principles of Learning English as a second language • Characteristics of curriculum, syllabus, textbook • Principles of Designing Lesson Plans and formats • English Language Teaching-Learning Processes (Learning through games, literature, authentic materials, literature, real-life situations, ICT)	20	20
UNIT-2	**LEARNING AND**	• Listening (L)	20	25

	TEACHING OF ENGLISH AS A SECOND LANGUAGE (CONCEPTS, DEVELOPING TEACHING-LEARNING PLANS AND MATERIALS)	• Speaking (S) • Reading (R) • Writing (W) • Vocabulary (V) • Grammar (G) • Poetry • Integrated (for L,S,R,W,V,G)		

2.

Internal Assessment 10 marks
• Internal assessment will be based on project work (10 marks)

3- **Reference:**

Agnihotri R.K. and A.L.Khanna, 1996 English Grammar in Context, Ratna Sagar Publication.

Adrioan Doff, Teacher's workbook – Teah English-Cambridge Teacher Training and Development.

Das Gupta, J. 1970. Language Conflict and National Development : Group Politics and National language Policy in India, p. 43-45)

George Yule, Second Language acquisition/learning – Pg no. 162 to 170 - The study of Language (Third edition)

J.C. Aggarwal, Principles, methods and techniques of teaching, Vikas Publishing House PVT LTD, Second Revised Edition.

Jack C. Richards, Theodore S. Rodgers, Approaches and methods in language teaching: Foundation of Bilingual education and bilingualism, Colin Baker.

Jim Trelease, When to begin read – The new read aloud Handbook

Lorna M. Earl, Assessment as Learning – Using classroom assessment to maximize student learning, Corwin Press, INC.

Mary Spratt., English for the teacher – A language development course –

V. Saraswati, English Language Teaching Principle, Practices Orient Longman

Dianne Larsen – Freeman Technique and Principle in Language Teaching OUP

Jane Willis- Teaching English Through English .

Kamlesh Sadanand & Susheela Punita 2014 - Spoken English – A Foundation Course

Learn English, Teach English: English Skills for Teachers- Ravinarayan Chakrakodi

Padhne ki sanajh – Reading development Cell – NCERT

Reading for meaning – Reading development Cell – NCERT

Robert L. Linn, Norman E. Gronlund, Measurement and Assessment in Teaching, Englih edition, Person Education, Inc.

Rungeen singh, Kitu oges on a holiday – Vishv books

S. nagarajan, 'the decline of English in India', college English, Vol. 43, No. 7, Nov. 1981, Pg 665

Susan B. Neuman and Kathleen Roskos, Nurturing Knowledge.
The TKT Tteaching Knowledge Textbook- Mary Spratt, Ala Pulverness, Melanie Williams-CUP
Brad Decan and Tim Murphy, Kahani sunakar to dekho
IGNOU, CTE, 01, Block 4, Unit 15, pg no. 25-26
IGNOU, CTE, 01, Block 4, Unit 15, Pg 24
Learning Curve – Language Issue – Azim Premji Foundation
NCERT- NCF –2005
Prashant Agrawal, 'Leader Article: Myths about English', The Times of India, Nov 17, 2007
Sanjiv Kaura, 'Language Without barriers', The times of India, Mar 11, 2010
Time to rhyme – A CBT publication – Eklavya
Young India 1919-22, p. 451
Web links:
http:// www.uwsp.edu/education/lwilson/learning/quest2.htm
http:// www. Educationsoasis.com/curriculum/LP/LP resources/lesson objectives.htm#avwww.cbse.nic .in
www.ncert.nic.in
http:// www.improvespokenenglish.org/search/label/Conversation
http:// www.mindmapart.com/energy-saving-mind-map-jane-genovese
http:// www.msu.edu/caplan/drama/tesol2005/situations.doc
http:// www.scribd.com/doc/391505/Paragraph-Writing
http:// www.teflgames.com/why.html- May 28, 2010
www.sendaiedu.com/effectiveuseofthetxtbookhandouthung.doc
www.slideshare.net/wisdom/adaptingalanguagetextbook
en.wikipedia.org/wiki/Children's_literature
http://www.brighthub.com/education/k-12/articles/6211.aspx#ixzzorUR6623j

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
प्रश्न पत्र – तेरहवां

विषय – संस्कृत भाषा शिक्षण

उद्देश्य–

- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत भाषा शिक्षण के महत्व से अवगत होना।
- भाषाई कौशलों का विकास करना।
- संस्कृत में प्रश्नोत्तर एवं संस्कृत वाक्य रचना करने योग्य बनाना।
- राष्ट्र के प्रति आदर एवं भावात्मक एकता का विकास करना।
- भाषिक तत्वों की प्रयोगात्मक क्षमता का विकास करना।
- नैतिक मूल्यों का विकास करना।
- संस्कृत में वार्तालाप करने की क्षमता का विकास करना।
- रोचक कथाओं को पढ़कर घटनाक्रम के अनुसार जोड़ने की क्षमता विकसित करना।
- अध्यापन बिन्दुओं पर आधारित रोचक एवं ज्ञानात्मक क्षमता का विकास करना।
- प्रश्न निर्माण करने की क्षमता का विकास करना।

भाषा (संस्कृत) व भाषा शिक्षण				
इकाई क्र	पाठ/ विषयवस्तु		कुल अंक 40	कालखण्ड 45
			अंक	कालखण्ड
01	संस्कृत भाषा शिक्षण	• संस्कृत भाषा को व्यवहारपरक कैसे बनाएँ • संस्कृत भाषायी कौशलों का विकास कैसे हो? • संस्कृत में वार्तालाप करने की क्षमता कैसे विकसित करें • संस्कृत में नैतिक मूल्यों का विकास कैसे करें • संस्कृत भाषा के प्रति बच्चों में अभिरुचि कैसे सृजित करें	10	10
02	आधार पाठ्यक्रम पाठ्यवस्तु पर आधारित मनोरम संस्कृत कक्षा 8	• सरल संस्कृत में गद्य पठन • सरल संस्कृत में पद्य पठन • लघु कथा/ आरव्यायिकाओं को सरल संस्कृत में कैसे अवबोध कराएँ • संस्कृत के प्रति बच्चों में अभिरूचि बढ़ाने हेतु • स्वस्तिवाचन/मङगलाचरण कैसे करावें • मित्र/माता/गुरू को सरल संस्कृत में पत्र कैसे लिखें?	10	10
03	व्याकरणिक विधाएं	• भाषा की शुद्धता हेतु संस्कृत भाषा में ध्वनि के स्वरूप	10	15

		• को कैसे निर्धारित करें। • संस्कृत के संधि व समास युक्त शब्दों को सरल कर कैसे बोध कराएँ। • बच्चों को संस्कृत कारकों का बोध कराते हुए वाक्य प्रयोग की • अवधारणा को कैसे पुष्ट करें ? • सरल संस्कृत में क्रिया, पुरूष काल व लिङ्ग का प्रयोग कैसे करावें ? • सरल संस्कृत में वाच्य परिवर्तन कैसे करावें • गद्य शिक्षण अथवा पद्य शिक्षण में आये अव्यय अथवा उपसर्गों का बोध • कराते हुए बच्चों को सरल संस्कृत कैसे सिखाएँ ? • सरल संस्कृत में कृदन्तों का व्यावहारिक प्रयोग कैसे करावें।		
04	**काव्यतत्व (काव्यतत्वों की जानकारी)**	• मात्रिक व वर्णिक छंदों का कैसे बोध करावें। • अनुष्टुप, उपेन्द्रवजा, द्रुतविलंबित तथा वसंततिलका आदि छंदों का • ज्ञान बच्चों को कैसे कराएँ ? • अनुप्रास, यमक व श्लेष जैसे अलंकारों के माध्यम से बच्चों में काव्यगत • सौंदर्यानुभूति का बोध कैसे करावें।	10	10

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- दो संस्कृत गद्यों का हिन्दी में अनुवाद।
- वर्णमाला का चार्ट निर्माण।
- संस्कृत के पांच कवियों के नाम
  लिखना व उनकी रचना एवं वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालना।
- एक गद्य, पाठ्योजना तैयार करना
- पाठ्योजना हेतु सहायक सामग्री का निर्माण।
- संस्कृत में किसी विषय पर व्यावहारिक संवाद।
- संस्कृत में किसी विषय पर निंबंध लेखन
- संस्कृत के व्यावहारिक शब्दों का संकलन (विद्यालय, घर, परिवेश पशु, पक्षी, फल शाकादि।

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
प्रश्न पत्र – चौदहवां

विषय – गणित व गणित शिक्षण

उद्देश्य–

- गणित की प्रकृति के बारे में समझना।
- विभिन्न गणितीय अवधारणाओं यथा भिन्न की संक्रियाएँ दशमलव ,आंकड़ों का विश्लेषण, आयतन, धारिता, ऋणात्मक संख्याएँ इत्यादि के बारे में समझना।
- गणित व भाषा का संबंध, गणित सीखने में भाषा की भूमिका के बारे में समझना।
- कक्षा कक्ष में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया पर समझ तथा एक अच्छी गतिविधि के गुणों को समझना।
- संभावना (प्रायिकता) के बारे में समझ।
- नई गतिविधियों का निर्माण करना।

गणित व गणित शिक्षण

क्र	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 90	
			अंक	कालखण्ड
01	गणित की प्रकृति	• गणित का स्वरूप • गणित के तत्व • भाषा का विकास	12	13
02	भिन्नात्मक संख्याएँ	• भिन्न की संक्रियाएँ • भिन्नों में सूत्र विधि पर चर्चा	14	16
03	मापन की समझ	• मापन की समझ समय का मापन	07	09
04	गणित सीखना–सिखाना व गतिविधियाँ	• गतिविधियों से सीखना • सीखने की प्रक्रिया पर विभिन्न विचार निरूपण	15	16
05	आँकड़ों का निष्कर्ष और संभावना	• आँकड़ों से निष्कर्ष निकालना कैसे सिखाएँ • संभावना के बारे में सीखना	10	12
06	संख्याओं का वृहद स्वरूप	• ऋणात्मक संख्याएं • अंकगणित से बीजगणित की ओर	15	16
07	वैदिक गणित व भारतीय गणितज्ञ	• वैदिक गणित व भारतीय गणितज्ञ	07	08

आंतरिक मूल्यांकन	कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

1. किसी कक्षा के विद्यार्थियों की ऊँचाई का आंकड़ा एकत्रित कीजिए व उसका विश्लेषण कीजिए।
2. भिन्न पर आधारित प्रश्न–पत्र बनाइए तथा बच्चों द्वारा दिये गये जवाबों का विश्लेषण कीजिए (क्या आता है ? क्या नहीं आता है ? क्या सिखाने की जरूरत है ?)
3. गणित की किसी अवधारणा को तीनों मॉडलों (बैंकिग, प्रोग्रामिंग, रचनावाद मॉडल) की सहायता से समझाने के लिए किसी कक्षा की शिक्षण योजना का निर्माण।
4. दो गणितज्ञों का परिचय एवं उनकी उपलब्धियां के बारे में जानकारी संकलित करना ।
5. भाग की संक्रिया में बच्चों को होने वाली कठिनाईयां (भिन्न–भिन्न प्रश्नों के संदर्भ में) एवं उनका विश्लेषण
6. संभावना के बारे में बच्चों की धारणा को जानने के लिए आंकड़े एकत्रित करें।
7. आप जिस बच्चे को पढ़ा रहे हैं, उसकी गणित पाठ्यपुस्तक के किसी अध्याय का भाषा की दृष्टि से मूल्यांकन कीजिए।

संदर्भ–

- LMT खण्ड –1, इकाई –1, इकाई –2
- LMT खण्ड –2, इकाई –4, इकाई –5, इकाई –6, इकाई –7
- LMT खण्ड –3, इकाई –8, इकाई –9, इकाई –10
- LMT खण्ड –5, इकाई –14, इकाई –15
- LMT खण्ड –6, इकाई –17
- AMT खण्ड –2, इकाई –10
- AMT खण्ड –3, इकाई –9, इकाई –11
- AMT खण्ड –4, इकाई –14
- AMT खण्ड –5, इकाई –17
- NCERT class 6th Text book

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
प्रश्न पत्र – चौदहवां

विषय – विज्ञान एवं विज्ञान शिक्षण

उद्देश्य–

- प्रेक्षण, वर्गीकरण, मापन तथा संप्रेषण आदि प्रक्रियाओं के कौशलों का विकास।
- ज्ञान की प्राप्ति तथा समझ, समस्या समाधान, कौशल का विकास, अन्वेषण कौशल, तर्कपूर्ण ढंग से विचार करने की योग्यता एवं प्रयोगों के आधार पर निष्कर्ष निकालना।
- सामान्य सिद्धान्तों पर पहुंचने की योग्यता का विकास तथा दैनिक समस्याओं की हल करने के लिए ज्ञान का प्रयोग।
- विज्ञान तथा समाज के अन्र्तसम्बन्ध की समझ का विकास।
- विद्यार्थियों में सृजनात्मकता तथा विज्ञान में नवीनीकरण संबंधी प्रयोगों को करने की योग्यता का विकास।
- विज्ञान के द्वारा विद्यार्थी की जिज्ञासा, ईमानदारी, आत्म विश्वास एवं निर्णय लेने की योग्यता, जीवनमूल्यों की जांच करना, तार्किकता एवं विज्ञान संबंधी नैतिकता

विज्ञान एवं विज्ञान शिक्षण

क्र	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 80	कालखण्ड 90
			अंक	कालखण्ड
01	विद्यालयीन परिप्रेक्ष्य में विज्ञान :–	▪ भूमिका ▪ विज्ञान एवं समाज – – विज्ञान सबके लिए – पर्यावरणीय चिन्तांए Activity (i) ▪ विज्ञान की प्रकृति – – विज्ञान क्या है ? • क्रमबद्ध ज्ञान • ज्ञान की खोज • समस्या समाधान • तर्क संगतता • प्रकृति के साथ समायोजन Activity (ii) ▪ विज्ञान एक प्रक्रिया • अवलोकन • वैज्ञानिक जांच • प्रदत्तों का संग्रह • विश्लेषण • निष्कर्ष • सिद्धान्त • सार्वभौमिकरण Activity (iii) ▪ विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य :– • विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य	12	12

		• उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य • विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य • उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य– ıctivity (iv)		
02	विज्ञान शिक्षण की विधियॉ एवं कौशल विकास :–	▪ उद्देश्य ▪ प्रस्तावना ▪ विज्ञान शिक्षण की विधियॉ Activity (v) ▪ विज्ञान शिक्षण की वैज्ञानिक विधियॉ ▪ समूह क्रियात्मक विधियॉ ▪ विज्ञान शिक्षण की तकनीकियॉ Activity (vi) ▪ विज्ञान शिक्षण में चयनशील प्रकृति Activity (vii) ▪ अभ्यास के प्रश्न	18	22
03	सहायक शिक्षण सामग्री एवं करके देखना :–	▪ अधिगम में प्रत्यक्ष अनुभव की भूमिका Activity (viii) ▪ भौतिकी में विषयवस्तु पर आधारित सहायक शिक्षण सामग्री एवं गतिविधियॉ Activity (ix) ▪ जीव–विज्ञान में विषयवस्तु पर आधारित सहायक शिक्षण सामग्री एवं गतिविधियॉ Activity (x) ▪ कबाड़ से जुगाड़ द्वारा सहायक सामग्री निर्माण ▪ प्रायोगिक कार्य सामग्री हेतु कबाड़ से जुगाड़ Activity (xi)	18	21
04	विज्ञान शिक्षण में योजना एवं प्रबंधन :–	▪ प्रस्तावना ▪ उद्देश्य ▪ विज्ञान की पाठ्यचर्या – पाठ्यचर्या की अवधारणा – महत्व – पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धात (मुदलिया एवं कोठारी आयोग का उल्लेख) Activity (xii) ▪ योजना एक दृष्टि ▪ योजना की आवश्यकता एवं महत्व ▪ दीर्घावधि योजना ▪ अल्पावधि योजना Activity (xiii) ▪ कक्षा कक्ष में व्यक्तिगत विभिन्नताओं की पहचान एवं प्रवजन । Activity (xiv) ▪ विज्ञान शिक्षण में व्यवसायिक दक्षता का विकास ▪ विज्ञान शिक्षक की भूमिका एवं गुण ▪ राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के कार्यशाला में सहभागिता ▪ राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के संगठनों से संबद्धता	18	20

		Activity (xv) ▪ नवाचारी रिसर्च (उदाहरण के द्वारा) Activity (xvi) ▪ अभ्यास के प्रश्न Activity (xvii)		
05	विज्ञान शिक्षण में आकलन एवं मूल्यांकन :–	▪ प्रस्तावना ▪ उद्देश्य ▪ आकलन एवं मूल्यांकन की अवधारणा Activity (xviii) ▪ विज्ञान में आकलन एवं मूल्यांकन ▪ कठिन बिन्दुओं की पहचान एवं विज्ञान के अधिगम में मदद के लिए आंकलन का उपयोग करना। Activity (xix) ▪ संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं प्रयोगात्मक क्षेत्रों का मूल्यांकन–Activity (xx) ▪ प्रश्न पत्र का ब्लुप्रिंट (उदाहरण द्वारा)	14	15

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक
कुछ उदाहरण • Action Research - शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान आने वाली किसी एक समस्या पर कुल अंक – 10 • Project work - सैद्धांतिक नियम पर आधारित कुल अंक – 05 • Assignment - सैद्धांतिक विषय पर आधारित कुल अंक – 05

संदर्भ :–

- NIOS की D.EL.ED. COURSE BOOK.
- IGNU की D.EL.ED. COURSE BOOK.
- Pt. sunderlal Sharma की D.EL.ED. COURSE BOOK.
- Bloom B.S.(1956),Taxonorry of Educational Objectives Handbook,I Longmam
- मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन – डॉ.विपिन अस्थाना , अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा–2, 2010/2011
- विज्ञान शिक्षण – डॉ.संजय गुप्ता,श्री विनोद पुस्तक मंदिर
- विज्ञान का अध्यापन – इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय दिल्ली Es-341 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयों शिक्षा संस्थान उ.प्र.विज्ञान शिक्षण
- विज्ञान शिक्षण – शशिकिरण पांडे–वाणी प्रकाशन,21 A दरीयागंज
- विज्ञान शिक्षण– डॉ.श्रीमती प्रभा, डॉ.श्रीमती शोभा
 गोलवलकर,डॉ, श्रीमती निरूप्या शर्मा, श्रीमती शैलजा भारद्वाज, शारदा पुस्तक इलाहाबाद प्रथम संस्करण 01.2007

- जीव विज्ञान शिक्षण – डॉ.मुदित राठौर, अमिता सिंह, शिक्षा प्रकाशन जयपुर (2012),
- साधारण विज्ञान शिक्षण – डॉ.एस.के. मंगल,प्रकाशक आर्यबुक डिपो करोलबाग,नई दिल्ली चतुर्थ संस्करण 1990
- जीव विज्ञान शिक्षण – डॉ.पी.के.माहेश्वरी,आर.लाल बुक डिपो,निकट राजकीय इंटर कॉलेज मेरठ,तृतीय संस्करण 2003
- विज्ञान शिक्षण – डी.एस.रावत
- David E. Hennessy ; Elementary Teachar's Classroom Science Demonstrations and Activities,Prenrice hall of Indian N.D.(1996)
- Huffmire,D.Wynent:Teacher Demonstrations Laboratoty Expriences and Projects,Science Edu.262(3) 49-264.(1965)
- विज्ञान शिक्षण – शशिकिरण पांडेय, वाणी प्रकाशन, 21–ए दरियागंज, नई दिल्ली–110002
- सहायक सामग्री निर्देशका–शैल कुमार पांडेय
- सामान्य विज्ञान शिक्षण – पी.स्क्वायर सॉल्यूशन्स।
- Theory in to Practice; Activity in school for Students Teacher,John Haysom,Clive Suttow,Me Graw-Hill Book Company(U.K.) L.td. London.

2. प्रस्तावित प्रायोजनाओं के कुछ उदाहरण –
   - विज्ञान शिक्षण पर आधारित शिक्षण विधियों पर आधारित पाठ योजनाएं।
   - कबाड़ से जुगाड़ पर आधारित प्रायोजनाएं।
   - प्रश्न पत्र के ब्लूप्रिंट के आधार पर कक्षा 8वीं, 7वीं या 8वीं के विज्ञान का प्रश्न पत्र निर्माण।
   - स्थानीय संसाधनों के आधार पर विज्ञान विषय (पूर्व माध्यमिक स्तर पर) के पाठ्यचर्या का विकास।
   - कक्षा प्रबंधन में आने वाले समस्याओं की सूची बनाकर उनके निदानात्मक उपचार का विकास।

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
प्रश्न पत्र – चौदहवां

विषय – सामाजिक विज्ञान एवं शिक्षण

उद्देश्य

- उन तरीकों को पहचानना जिनके द्वारा राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक मुद्दे उनके दैनिक जीवन को समय–समय पर प्रभावित करते हैं।
- पृथ्वी को मानव तथा जीवों के एक आवास के रूप में समझना।
- अपने स्वयं के क्षेत्र से परिचित होना तथा विभिन्न प्रदेशों (स्थानीय से लेकर भूमंडलीय) की पारस्परिक निर्भरता को समझना।
- संसाधनों के स्थानीय वितरण तथा उनके संरक्षण को समझना।
- भारतीय इतिहास के विभिन्न कालों के ऐतिहासिक विकास को समझना, विभिन्न प्रकार के स्त्रोतों से इतिहासकार अतीत का अध्ययन कैसे करते हैं ? इसे समझना।
- एक स्थान/क्षेत्र के विकास का दूसरे से संबंध स्थापित करते हुए ऐतिहासिक विविधता को समझना।
- भारतीय संविधान के मूल्यों और दैनिक जीवन में उनके महत्व को आत्मसात करना।
- भारतीय लोकतंत्र और उसकी संस्थाओं एवं संघीय, प्रांतीय तथा स्थानीय स्तर की प्रक्रियाओं के प्रति समझ विकसित करना।
- परिवार, बाजार और सरकार जैसी संस्थाओं की सामाजिक आर्थिक भूमिका से परिचित होना।
- राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरण–प्रक्रियाओं में समाज के विभिन्न वर्गों के योगदान को पहचानना।

सामाजिक विज्ञान एवं शिक्षण				
क्र	पाठ/ विषयवस्तु		कुल अंक 80 कालखण्ड 90	
			अंक	कालखण्ड
इकाई–1,	सामाजिक विज्ञान की प्रकृति	➢ सामाजिक विज्ञान – विकास की संकल्पना (विकास का क्रम–पर्यावरण, सामाजिक अध्ययन, सामाजिक विज्ञान) ➢ परिवार,एवं समाज के प्रति बच्चे की समझ ➢ समाज की तात्कालिक स्थिति – ➢ सामाजिक विज्ञान के घटक – संस्कृति	13	13
इकाई–2,	विद्यालय पाठ्यचर्या में सामाजिक विज्ञान	➢ औपनिवेशिक शक्ति – राष्ट्रवादी विकल्प. ➢ स्वतन्त्रता पश्चात् सामाजिक अध्ययन की पाठ्यचर्या ➢ सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में	13	13

		तात्कालिक राष्ट्रीय सोच। सोशल मीडिया – और फेक न्यूज. 1. संचार माध्यमों को समझना 2. विज्ञापनों को समझना		
इकाई–3,	इतिहास	➢ प्रारंभिक स्तर पर इतिहास की समझ ➢ इतिहास अध्यापन की विधियाँ एवं महत्व	10	10
इकाई–4	भूगोल	➢ प्रारंभिक स्तर पर भूगोल की समझ ➢ भूगोल अध्यापन की विधियाँ एवं महत्व	10	10
इकाई–5.	राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र के एकीकृत विषय के रूप में सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन	➢ प्रारंभिक स्तर पर राजनीति विज्ञान एवं अर्थशास्त्र की समझ ➢ राजनीति विज्ञान एवं अर्थशास्त्र अध्यापन की विधियाँ एवं महत्व	08	10
इकाई–6.	अधिगमकर्ता की प्रकृति और स्थानीय संदर्भ की समझ	➢ अधिगमकर्ता की प्रकृति और स्थानीय संदर्भ की समझ बच्चों को संकल्पना की समझ ➢ सामाजिक विज्ञान के ज्ञान की संरचना और कक्षा–कक्ष अर्न्तः क्रिया	07	09
इकाई–7.	शिक्षण अधिगम की रणनीतियाँ।	1. प्रजातात्रिक व्यूह रचना – विचार विमर्श या विवेचन, अन्वेषण, योजना, मस्तिष्क विप्लव, पात्र अभिनय, स्वतंत्र अध्ययन, संवेदनशील प्रशिक्षण, समाजीकृत अभिव्यक्ति	07	09
इकाई–8.	सामाजिक विज्ञान में अधिगम संसाधन	➢ सामाजिक विज्ञान में – ➢ अधिगम संसाधनों के प्रकार ➢ अधिगम, संसाधनों का प्रबंधन ➢ विद्यालय प्रबंधन, कक्षा प्रबंधन,	07	09
इकाई–9	सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन	➢ मूल्यांकन किसका, क्यों और कैसे. मूल्यांकन का आधार,	05	07

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक
कुछ उदाहरण **इतिहास खण्ड –** 1. अपने गाँव/नगर/शहर का इतिहास लिखिए। 2. सल्तनत काल से लेकर मुगल काल तक भारतीय जन जीवन का वर्णन कीजिए। **नागरिक शास्त्र –** 1. अपने गाँव/नगर/शहर में कार्यरत स्व–सहायता समूह की सूची बनाइए तथा उनके कार्यं से प्राप्त लाभ को सूचीबद्ध कीजिए। 2. अपने आस–पास हो रहे मीडिया के प्रभाव और दुष्प्रभाव को रेखांकित कीजिए। **भूगोल–** 1. अपने गाँव/नगर/शहर का नजरी नक्शा बनाइए तथा महत्वपूर्ण स्थानों को संकेतों द्वारा प्रदर्शित कीजिए जैसे – तालाब, मंदिर, पक्की सड़क, कच्ची सड़क, विद्यालय इत्यादि। 2. अपने गाँव/नगर/शहर के आस–पास पर्यावरण प्रदूषण के कारणों का पता लगाइए।

2. संदर्भ :–

- सामाजिक विज्ञान शिक्षण–डॉ.के.सी.वशिष्ठ
- सामाजिक विज्ञान का शिक्षण शास्त्र – डॉ. मोहन लाल आर्य

  – डॉ. महेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

  – भूपेन्द्र कौर

  – राजकुमारी गोला

  –क्रांति मोहन श्रीवास्तव

- छ.ग. में प्रचलित पाठ्यपुस्तक सामाजिक विज्ञान कक्षा – 10
- इतिहास शिक्षण – राम कुमार पचौरी
- राजनीति विज्ञान विश्वकोष– ओमप्रकाश
- राजनीति विज्ञान –एस.गुप्ता (नीलम पब्लिकेशन)
- भारतीय इतिहास 12वीं – एन.सी.ई.आर.टी.
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण – आचार्या मंजू शर्मा
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण – डॉ. एस.आर. शर्मा
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण – ओ.पी.गर्ग डॉ. संतोष शर्मा, लक्ष्मण
- राजनीति विज्ञान– अपेक्स सिंह देवल आई.ए.एस.एकेडमी
- राजनीति विज्ञान– प्रतियोगिता दर्पण
- एन.सी.ई.आर.टी.– रेडियो क्रार्यक्रम
- भारतीय अर्थव्यवस्था –रमेश सिंह
- भूगोल शिक्षण की आदर्श विधियाँ – कमलेश्वर वर्मा
- एन.सी.एफ.2005

डिप्लोमा इन ऐलिमेन्ट्री एजुकेशन (डी.एल.एड.)
(प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि)

व्यावहारिक पाठ्यक्रम

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

व्यावहारिक मूल्यांकन – अ

कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति भाग–1

उद्देश्य

- बच्चों के व्यक्तित्व के चहुमुखी विकास में योगदान देना।
- शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को रोचक व तनाव रहित बनाना।
- शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में बच्चों को आनन्द उठाने में समर्थ बनाना।
- बच्चों को सौंदर्य की पूर्ण सराहना एवं अनुभव करने की ओर आकर्षित करना। बच्चों को प्रकृति के करीब लाना। नयी पीढ़ी को अपनी धरोहर, परम्पराओं से अवगत कराना।
- बच्चों को जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करना सिखाना।

कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति भाग–1				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 20 कालखण्ड 24	
			अंक	कालखण्ड
1	**कला शिक्षा की अवधारणा एवं समझ**	1.1. क्षेत्रीय कला तथा शिल्प परिचय : शैक्षिक उपयोगिता। 1.2. कला शिक्षण विधि के रूप में । 1.3. दृश्य व प्रदर्शन कला और शिल्पकारी के संदर्भ में कला एवं शिल्प प्रदर्शनी का आयोजन। 1.4. नियमित रूप से किसी एक प्रसंग का बुलेटिन बोर्ड का प्रदर्शन। प्रसंग इस प्रकार हो सकते हैं – फिल्म, पुस्तकें, त्योहार, शिल्प, कलाकार, लेखक, स्थानीय कला व संस्कृति, कहानी, कविता, कार्टून आदि। 1.5. शाला अनुभव कार्यक्रमों के अंतर्गत कला, शिल्प, संस्कृति संबंधी, विविध प्रोजेक्ट। 1.6. कार्यशाला सजावट व शाला सौंदर्यीकरण ।	5	6
2	**कला समेकित शिक्षा एवं विद्यालय में शिक्षक**	2.0 कला समेकित शिक्षा की अवधारणात्मक समझ व शैक्षिक उपयोगिता। 2.1.विद्यालय की दैनिक गतिविधियॉं एवं विभिन्न विषयों के संदर्भ में कला शिक्षण को एकीकृत करना जैसे–कला और भाषा, कला एवं गणित, कला और पर्यावरण। 2.2.सीखने के संसाधन के रूप में शिल्प, हस्त शिल्प, संग्रहालय, ऐतिहासिक इमारतें, भवन, फिल्म, पुस्तकें, उत्सव, पर्यटन इन पर रिपोर्ट लेखन एवं समीक्षा।	5	6

3	**दृश्य एवं प्रदर्शन कलाएँ**	3.1. दृश्य कलाओं के विविध प्रकार एवं सामग्री निर्माण : मिट्‌टी से सामग्री निर्माण, कबाड़ से जुगाड़, कठपुतली निर्माण, खिलौने, कॉलाज, मुखौटे बनाना, रंगोली, चित्रकारी, पेपर क्राफ्ट एवं अन्य स्थानीय शिल्प आदि। कला संबंधी कौशलों का विकास एवं शिक्षण में उपयोग।	5	6
4	**दृश्य एवं प्रदर्शन कलाएँ : छत्तीसगढ़ के संदर्भ मे**	4.1. गायन, वादन, नृत्य, रंगमंच एवं समकालीन प्रदर्शन कलाओं के विविध स्वरूपों को विद्यालय में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से जोड़ना। 4.2. कला संबंधी विभिन्न स्थानों का भ्रमण एवं रिपोर्ट लेखन।	5	6

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- स्थानीय सामग्री से खिलौना एवं कलाकृति बनाना। (मिट्‌टी, बांस, घास आदि)।
- पेपर क्राफ्ट संबंधी प्रोजेक्ट।
- स्थानीय कलाओं की जानकारी एकत्र करना तथा उसके ऐतिहासिक संदर्भों को लिपिबद्ध करना।
- स्थानीय समस्याओं को नाटक एवं कला के अन्य रूपों द्वारा प्रस्तुत करना।
- कला कृतियों का स्थानीय कला व शिल्प के संदर्भ में निर्माण।
- विभिन्न कलाओं, शिल्पों एवं शिल्पकारों के स्थानीय संदर्भ में मानचित्रीकरण।
- कबाड़ से कलाकृतियों का निर्माण।
- संस्थान में कला संसाधन केन्द्र का निर्माण (जिसमें कला के विविध आयाम एवं नाटकों उपयोगी सामग्रियों का संकलन)

संदर्भ –

- पाठ्‌यचर्या नवीनीकरण के लिए शिक्षक–शिक्षा राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय पाठ्‌यचर्या की रूपरेखा 2005 – राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2016 (ड्राफ्ट)
- छत्तीसगढ़ समग्र, संस्करण – प्रथम 2013, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी एवं ग्रंथ अकादमी, पी–3, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय परिसर, रायपुर (छ0ग0)
- हस्तशिल्पों की धरोहर, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

- कला से सीखना – जेन साही एवं रोशन साही, एकलव्य का प्रकाशन।
- प्राथमिक शाला में कारीगरी की शिक्षा – गिजुभाई, साक्षरता केन्द्र, नई दिल्ली।
- समेकित पाठ्यपुस्तक (गणित–पर्यावरण), कक्षा–5 भाग–2, 2014–15 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- शिक्षा का वाहन – कला – देवी प्रसाद, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया।
- कला व शिक्षा पर आधार पत्र – एस.सी.ई.आर.टी., छत्तीसगढ़, रायपुर।
- ''कबाड़ से जुगाड़'' – विष्णु चिचोंलकर
- ड्रामा विथ चिल्ड्रन – सारा फिलिप

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
व्यावहारिक मूल्यांकन – ब

योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावात्मक शिक्षा भाग–1

उद्देश्य

- उत्तम स्वास्थ्य एवं सुखीजीवन की समग्र अवधारणात्मक समझ का विकास।
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य के मध्य गुणात्मक संबंध की समझ का विकास करने में शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट करना।
- स्वच्छ पेय जल, संतुलित आहार एवं संपूर्ण परिवेशीय स्वच्छता की जानकारी देना।
- समाज के वंचित एवं उपेक्षित वर्ग की समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना।
- योग, व्यायाम एवं खेलकूद की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करना।

योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावात्मक शिक्षा भाग–1				
क्र.	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 20 कालखण्ड 24	
			अंक	कालखण्ड
1	बच्चों के स्वास्थ्य एवं खुशहाल जीवन की समझ	• शरीर के विभिन्न अंगों की सफाई जैसे – आँख, नाक, कान मुँह, हाथ, नाखून एवं बालों की सफाई। • कपड़ों की सफाई एवं नित्य स्नान का महत्व।	04	04
2	विद्यालय के संदर्भ में बच्चों का स्वास्थ्य	• विद्यालयीन स्वास्थ्य सेवाएं, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और स्वास्थ्य परीक्षण, हेल्थ कार्ड एवं उपचार व्यवस्था, प्राथमिक चिकित्सा का महत्व, आकस्मिक दुर्घटना, जलने, चोट लगने, डूबने आदि पर प्राथमिक उपचार । • विद्यालय के संदर्भ में स्वास्थ्य सुविधाओं का आकलन–क्लासरूम, पेयजल, स्वच्छता, शौचालय एवं खेल का मैदान। • मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम का उद्देश्य, मुख्य तत्व एवं क्रियान्व्यन।	04	05
3	सामुदायिक स्वास्थ्य एवं उपभोक्ता जागरूकता	• जल संरक्षण एवं रखरखाव, जल प्रदूषण एवं उससे होने वाली बीमारियाँ। • सार्वजनिक स्वच्छता, स्वच्छ भारत अभियान, खुले में शौच के दुष्प्रभाव।	04	05
4	समावेशी शिक्षा	• गरीबी, असमानता और स्वास्थ्य के मध्य अंतर्संबंधों की समझ।	04	05
5	योग, व्यायाम एवं खेल गतिविधियों	• योगासन, प्राणायाम एवं व्यायाम की प्राथमिक स्तर की गतिविधियाँ ।	04	05

	का स्वास्थ्य से संबंध	• शारीरिक शिक्षा के आधार पर मूल्यों का विकास–सहयोग एवं समन्वय, समूह भावना, भावात्मक स्थिरता एवं सृजनात्मकता। • शारीरिक शिक्षा की अवधारणा एवं महत्व, प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए शारीरिक शिक्षा की प्रमुख गतिविधियाँ, प्रचलित स्थानीय खेल।		

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक
कुछ उदाहरण • कक्षा में लगातार अनुपस्थित बच्चें के सामाजिक आर्थिक एवं पारिवारिक कारणों का पता लगाना एवं नियमित उपस्थिति के लिए प्रेरक प्रयास करना। • स्थानीय उपलब्धता के आधार पर घरेलू एवं प्राकृतिक चिकित्सा के उपायों की जानकारी एकत्रित करना। • समुदाय में स्वच्छता के प्रति जागरूकता का अध्ययन। • अस्वच्छता के कारण बच्चों में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का अध्ययन। • स्थानीय स्तर पर जल स्त्रोतों की जानकारी जल प्रदूषण एवं उनसे स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभावों का दस्तावेजीकरण

संदर्भ –

- स्वास्थ्य शिक्षा – इग्नू एन.सी.ई.आर.टी.सहयोगात्मक परियोजना नईदिल्ली
- विकलांग स्वस्थ व आत्मनिर्भर कैसे बने – विनोद कुमार मिश्र,कल्याणी शिक्षा परिषद् दरियागंज, नई दिल्ली
- योग(कक्षा 6 से 8) शिक्षा – भाग–2 ,एन.सी.ई.आर.टी रायपुर
- विद्यालय स्वास्थ शिक्षा – सरयू प्रसाद चौबे अखिलेश चौबे,मयुर पेपर बैक्स ए–95,सेक्टर–5 नोएडा
- स्थानीय लोक खेल – चन्द्रशेखर चकोर,बरछाबारी
- प्रमुख खेल नियम – हरिसिंह अहलावत,बी.आर.पब्लियर्स जयपुर–01
- स्वास्थय एवं शारीरिक शिक्षा भाग–1 – डा. एच.एल.खत्री,पैरागॉन इन्टरनेशनल पब्लियर्स नई दिल्ली
- जीवन कौशल शिक्षा – श्रीमती समता शेखावत,दिशा पब्लिकेशन जयपुर
- मूल्य एवं नैतिक शिक्षा – श्रेनु चौधरी,अपोलो प्रकाशन, पिंक सीटी मार्केट पंचवटी राजापार्क जयपुर

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष
व्यावहारिक मूल्यांकन – स

कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास भाग–1

उद्देश्य

- कार्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य को समझना।
- कार्य शिक्षा के लक्ष्य, उद्देश्य तथा विषय क्षेत्र को समझना।
- शिक्षक शिक्षा में कार्य शिक्षा के उद्देश्यों, महत्व को पहचानना, विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों में से सीखने की गतिविधियों को खोजना तथा उनका आयोजन करना।
- अधिगम सामग्री के महत्व को समझना तथा स्वनिर्मित अधिगम सामग्री का उपयुक्त परिस्थितियों में उपयोग करना
- कार्य शिक्षा से जुड़े क्षेत्रों की पहचान करना तथा आवश्यक गतिविधियों से जुड़ना।
- शिक्षा में कार्य शिक्षा की आवश्यकता, संकल्पना और प्रकृति को समझना।
- कार्य शिक्षा को अन्य विद्यालयी विषयों के साथ एकीकृत कर पाना।
- श्रम तथा श्रमिक के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति का विकास ।
- कार्य को बच्चे के शारीरिक, मानसिक सामाजिक, सांस्कृतिक विकास के उपकरण

  के रूप में उपयोग करने के कौशल का विकास।
- कार्य शिक्षा के लिए समुदाय के संसाधनों को पहचानना और संगठित करना।

कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास भाग–1			
पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 20 कालखण्ड 24	
		अंक	कालखण्ड
विषय प्रवेश	1.1 उद्देश्य 1.2 कार्य का अर्थ 1.2.1 कार्य तथा श्रम का महत्व 1.2.2 कार्य तथा आजीविका 1.2.3 कार्य, आनंद तथा संतुष्टि 1.3 शिक्षा में कार्य 1.3.1 कार्य शिक्षा की अवधारणा तथा अर्थ 1.3.2 कार्य शिक्षा का महत्व	04	04
कार्य शिक्षा का क्रियान्वयन (सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलू)	2.1 उद्देश्य 2.2 कार्य शिक्षा का पाठ्यक्रम 2.2.1 सामग्री उपकरण और तकनीकी का उपयोग 2.2.2 कार्यानुभव 2.3 छात्रों के समूह बनाना 2.3.1 समय का आबंटन 2.3.2 स्थान का आबंटन	06	07

	2.4 विभिन्न कक्षाओं के लिए कार्य शिक्षा की योजना 2.4.1 बुनियादी आवश्यकताओं की बेहतर पूर्ति से संबंधित गतिविधियाँ 2.4.2 पर्यावरण की सुन्दरता से संबंधित गतिविधियाँ 2.4.3 सामाजिक सेवा से संबंधित गतिविधियाँ 2.4.4 सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय एकीकरण से संबंधित गतिविधियाँ 2.4.5 पर्यावरण जागरुकता से संबंधित गतिविधियाँ 2.5 प्रारंभिक कक्षाओं के लिए सामग्री का चयन और समन्वयन से संबंधित कार्य शिक्षा 2.6 सामग्री और उपकरणों का भंडारण 2.7 पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों का अनुभव और एकीकृत करने के तरीके 2.7.1 भाषा 2.7.2 गणित 2.7.3 पर्यावरण अध्ययन, 2.8 कार्य शिक्षा से संबंधित शिक्षण अधिगम गतिविधियों के तरीके 2.8.1 अवलोकन 2.8.2 प्रदर्शन विधि 2.8.3 प्रायोगिक विधि 2.8.4 परियोजना विधि 2.8.5 भ्रमण विधि 2.9 कार्य शिक्षा में गतिविधियों का चयन करने के लिए मापदंड और आधार		
शाला एवं समुदाय में कार्य शिक्षा	3.1 उद्देश्य 3.2 कार्य शिक्षा के संदर्भ में समुदाय की भूमिका 3.3 कार्य शिक्षा को लागू करने के लिए सामुदायिक संसाधनों की पहचान और उपयोग 3.3.1 सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में समुदाय का सहयोग 3.3.2 शाला एवं विद्यार्थियों के मूल्यांकन में समुदाय का सहयोग 3.4 कार्य शिक्षा के महत्व के संदर्भ में समुदाय का उन्मुखीकरण एवं मार्गदर्शन	04	06
कार्य शिक्षा में मूल्यांकन	4.1 उद्देश्य 4.2 मूल्यांकन क्या है ? 4.2.1 आकलन तथा मूल्यांकन 4.2.2 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन	06	07

	4.3 मूल्यांकन के उपकरण एवं विधियाँ 4.3.1 अवलोकन 4.3.2 साक्षात्कार 4.3.3 चेकलिस्ट 4.3.4 संचयी रिकार्ड्स 4.3.5 प्रश्नावली 4.3.6 फोटोग्राफ/पोर्टफोलियो 4.4 मूल्यांकन में सहपाठियों की भूमिका 4.5 मूल्यांकन में पालकों की भूमिका 4.6 विद्यार्थियों की प्रगति रिपोर्ट पर पालकों से संवाद 4.6.1 संवाद का अर्थ 4.6.2 संवाद के बिन्दु		

आंतरिक मूल्यांकन **कुल 20 अंक**
कुछ उदाहरण o माचिस की तीलियों से गुड़िया बनाना o रबर के खिलौने बनाना o माचिस के बक्से से वाहन बनाना o कार्ड बोर्ड से मुखौटे बनाना o नारियल जूट से आकृतियाँ बनाना o कागज के बैग बनाना o कागज तथा कपड़े के फूल बनाना o मोमबत्ती बनाना o बोनसाई तैयार करना o ग्रीटिंग कार्ड्स बनाना o फ्लावरपॉट बनाना/सजाना o अनुपयोगी सामग्री से फोटोफ्रेम आदि बनाना o मॉडल बनाना o पेपर मेशी से मूर्तियाँ बनाना o घरेलू उपकरणों का रखरखाव o शाला में बागवानी o खाद्य प्रसंस्करण

I. संदर्भ –

- Work Education in Schools, CBSE, Delhi
- Elementary Teacher Education Curriculum
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE- 1986)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF – 2000)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF - 2005)

- राज्य की पाठ्यचर्या की रूपरेखा (SCF - 2007)
- कार्यक्रम निर्देशिका 'सेवारत अप्रशिक्षित' अध्यापकों के लिए प्रारंभिक शिक्षा में द्विवर्षीय डिप्लोमा।
- कार्यानुभव शिक्षण – मंजू शर्मा, शंकर सिंह नाथावत।
- कार्यशिक्षा डॉ. मुनेष कुमार।
- समाजोपयोगी उत्पादक कार्य।
- कार्य अनुभव का शिक्षण डॉ. मुनेष कुमार।
- शिक्षा की बुनियाद – अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी।

डी.एल.एड. प्रथम वर्ष

व्यावहारिक मूल्यांकन – द

कम्प्यूटर शिक्षा भाग–1

1. उद्देश्य :–
- छात्राध्यापकों में सहशैक्षिक गतिविधि के रूप में कम्प्यूटर शिक्षा में रूचि का निर्माण करना।
- छात्राध्यापकों में प्रयोगों जैसे– Constructive and creative approach की अवधारणा को विकसित करना ।
- सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा शिक्षा में सुधार लाना।
- छात्राध्यापकों में सूचना के संग्रहण, वर्गीकरण, विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण के कौशल का विकास करना।
- छात्राध्यापकों में वैश्विक स्तर अनुसार तकनीकी के आधार पर व्यावहारिक परिवर्तन लाना।

कम्प्यूटर शिक्षा भाग–1			
पाठ/ विषयवस्तु		कुल अंक 20 कालखण्ड 24	
		अंक	कालखण्ड
कम्प्यूटर का परिचय	कम्प्यूटर का परिचय, कम्प्यूटर के उपयोग, कम्प्यूटर के प्रमुख भाग, हार्ड डिस्क, सी.डी./डी.वी.डी. पेन ड्राइव, प्रिंटर, स्पीकर, आपरेटिंग सिस्टम का सामान्य परिचय।	03	04
वर्ड प्रोसेसर एवं स्प्रेडशीट	वर्ड को प्रारंभ करना, नया डाक्यूमेंट बनाना एव सेव करना, पहले से सेव किये गये डाक्यूमेंट को खोलना, लेटर लिखना, टेक्स्ट/कॉपी/डिलीट/बोल्ड/अंडरलाइन /इटालिक करना, फोंट बदलना, अनडू करना, साधारण टेबल बनाना। स्प्रेडशीट, स्प्रेडशीट की विशेषतायें, स्प्रेडशीट को प्रारंभ करना, संख्या की फार्मेटिंग करना, सेल को कॉपी/पेस्ट करना, फॉन्ट बदलना, शार्ट आउट करना, रो इंसर्ट करना, कालम इंसर्ट करना, रो/सेल डिलीट करना।	03	04
प्रजेंटेशन	प्रेजेंटेशन को प्रारम्भ करना, नया प्रेजेंटेशन बनाना, डिज़ाइन टेम्पलेट उपयोग करना, बुलेट एवं नंबरिंग, नया स्लाइड जोड़ना, स्लाइड डिलीट करना, बीच में स्लाइड जोड़ना, स्लाइड में इमेज का उपयोग करना, प्रजेंटेशन विविध तरीके से प्रिंट करना।	04	05
इन्टरनेट, ई–मेल एवं विविध	इंटरनेट का संक्षिप्त परिचय, इंटरनेट ब्राउज करना। इंटरनेट एक शैक्षिक उपकरण के रूप में, इंटरनेट का उपयोग दैनिक जीवन में (न्यूज पेपर, रेल्वे टाइमटेबल आदि.........), ई–मेल आईडी बनाना(याहू एवं जी–मेल), ई–मेल में अटैचमेंट भेजना	05	05

	एवं ई–मेल से अटैचमेंट डाउनलोड करना।		
डिजिटल भुगतान प्रणाली	इंटरनेट बैंकिग, वालेट भुगतान प्रणाली (एस.बी.आई. बडी, एस.बी.आई. पे., भीम एप) डेबिट कार्ड/क्रेडिट कार्ड से भुगतान की प्रणाली, USSD द्वारा भुगतान की प्रक्रिया, ऑनलाइन/वॉलेट/डेबिट कार्ड/क्रेडिट कार्ड के द्वारा भुगतान से संबंधित समस्याओं का निराकरण।	05	05

कम्प्यूटर के आंतरिक मूल्यांकन हेतु दिशा निर्देश :–

कम्प्यूटर की प्रायोगिक परीक्षा के अंक निम्नानुसार निर्धारित हैं :

1. प्रायोगिक कार्यों का अभिलेख — 08 अंक
2. बाह्य परीक्षक द्वारा आबंटित कोई तीन प्रायोगिक कार्य — 08 अंक
3. बाह्य परीक्षक द्वारा लिया गया मौखिक परीक्षा — 04 अंक

पूर्णांक — 20 अंक

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक
कुछ उदाहरण

- एक कम्प्यूटर का स्वच्छ नामांकित चित्र बनाइये एवं सभी प्रमुख भागों का वर्णन कीजिये।
- वर्ड प्रोसेसर को प्रारम्भ करने, नया फाइल बनाने एवं उसे सेव करने की प्रक्रिया क्रमानुसार लिखिये।
- वर्ड प्रोसेसर के अंतर्गत किसी टेक्सट को सेलेक्ट/कापी/डिलिट/अनडू करने की प्रक्रिया क्रमानुसार लिखिये।
- प्रजेंटेशन के प्रारंभ करने, नया फाइल बनाने एवं उसे सेव करने की प्रक्रिया क्रमानुसार लिखिये।
- प्रजेंटेशन के अंतर्गत अलग–अलग डिजाइन टेम्पलेट का उपयोग करने की प्रक्रिया क्रमानुसार लिखिये।
- स्पेडशीट में डी.एड. की माक्रशीट बनाने की प्रक्रिया लिखिये।
- स्प्रेडशीट में रो/कालम इंसर्ट करने, रो/सेल डिलीट करने/वक्रशीट इंसर्ट करने, डिलीट करने की प्रक्रिया लिखिये।
- गूगल में ई–मेल आईडी बनाने की प्रक्रिया क्रमानुसार लिखिये।
- ई–मेल में किसी फाइल को अटैच करने एवं डाउनलोड करने की प्रक्रिया क्रमानुसार लिखिये।
- रेल्वे की आधिकारिक वेबसाईट "http://www.irctc.co.in" में प्रमुख ट्रेनों में रिजर्वेशन की स्थिति पता लगाने की प्रक्रिया लिखिये। (युजर नेम एवं पासवर्ड डी.एड. छात्रों को उपलब्ध कराया जायेगा।)
- ऑनलाइन बैंक एकाऊण्ट खोलने की प्रक्रिया का वर्णन करना।
- किसी एक मोबाईल एप से भुगतान करने की विधि का वर्णन करना।
- ऑनलाइन बैंकिग, वालेट, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, में अन्तर का वर्णन कीजिए।

II. संदर्भ –

1- How computer work - Que 10th edition
2- PCs for dummies - Dan Gookin 3rd edition
3- Hardware bible - Que 6th edition

4- Building the Perfect PC - o' Reilly 3rd edition
5- Microsoft word made easy- Rob Hawkins 2017 edition
6- Microsoft word 2007 for dummies - Dan Gookin
7- Microsoft office 2016 for dummies - peter weverka
8- Discovering computer and ms office - Shelly Cashman series 2016
9- डिजिटल कम्प्यूटर इलेक्ट्रानिक्स – गौरव शर्मा।
10- माइक्रोसॉफ्ट 2010 हिन्दी संस्करण।
11- Computer Fundamentals - Architecture organization, Ram, B 4th edition

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
व्यावहारिक मूल्यांकन – अ

कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति भाग–2

उद्देश्य

- बच्चों के व्यक्तित्व के चहुमुखी विकास में योगदान देना।
- शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को रोचक व तनाव रहित बनाना।
- शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में बच्चों को आनन्द उठाने में समर्थ बनाना।
- बच्चों को सौंदर्य की पूर्ण सराहना एवं अनुभव करने की ओर आकर्षित करना। बच्चों को प्रकृति के करीब लाना। नयी पीढ़ी को अपनी धरोहर, परम्पराओं से अवगत कराना।
- बच्चों को जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करना सिखाना।

कला शिक्षा व लोक संस्कृति भाग–2			
पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 20 कालखण्ड 21	
इकाई–1	• प्रारंभिक कक्षाओं के लिए कला एवं कला शिक्षा • कला शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा	अंक 05	कालखण्ड 04
इकाई–2	• कला एवं संस्कृति : अवधारणा, समझ एवं महत्व	05	05
इकाई–3	• कला का इतिहास : भारतीय एवं वैश्विक कला के सन्दर्भ में • चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्य कला, गीत संगीत, रंगमंच	05	06
इकाई–4	• प्रारंभिक कक्षाओं के लिए कला शिक्षण की योजना, आकलन व मूल्यांकन	05	06

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक
कुछ उदाहरण • निम्नांकित भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की सूची को भारत के मानचित्र में राज्यों के आधार पर अंकित कर इनका संक्षिप्त विवरण एकत्रित करना। 1. कत्थक 2. कथकली 3. भरतनाट्यम 4. कुचीपुड़ी 5.ओडिसी • विभिन्न विषयों के शिक्षण में नाटक का समावेश कैसे करेंगे, ताकि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया आनन्दायी हो सके। किसी एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करना। • अपनी संस्था या स्कूल में कला मड़ई का आयोजन समुदाय के साथ मिलकर करना। • राज्य में प्रचलित दंतकथाओं/मान्यताओं के अतंर्गत त्यौहारों,अवसरों/प्रसंगों पर बनाये जाने वाले लोक चित्रों का अंकन या संकलन कर बुलेटिन बोर्ड में प्रदर्शन करना। • नियमित रूप से बुलेटिन बोर्ड में कला संबंधित समाचार लिखना। • समुदाय में निहित लोक कथाओं का संकलन कर सीखने सिखाने की प्रक्रिया में इनका उपयोग करना। • डाइट और स्कूलों में कला संसाधन केन्द्र (कोना) का विकास बच्चों, शिक्षकों व समुदाय के सहयोग से करना। • विभिन्न राज्यों के ऐतिहासिक इमारतों के चित्रों का संग्रह कर स्क्रैब बुक का निर्माण करना। • मूल्यांकन और परीक्षा में आपके हिसाब से क्या अंतर है ? कक्षा शिक्षण में आप इनको कैसे सम्मिलित करेंगे ? • किसी एक कला विधा को कक्षा में बच्चे कैसे सीख रहे हैं, किन्ही दो बच्चों का अवलोकन कर रिपोर्ट तैयार करना।

संदर्भ :–

- शिक्षा का वाहन कला – देवी प्रसाद ,नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
- कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- हस्तशिल्पों की धरोहर– राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- डिप्लोमा इन एजुकेशन, प्रथम वर्ष 2013 हेतु कला एवं कला शिक्षण, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर छ.ग.।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- प्राथमिक शाला में कारीगरी की शिक्षा – गिजुभाई, साक्षरता केन्द्र, दिल्ली।
- नाट्यशास्त्र – पं. बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
- Source book on assessment for Class I-V, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- डिप्लोमा इन ऐलीमेन्ट्री एजुकेशन (दूरस्थ शिक्षा) स्वाध्यायी सामग्री, कला शिक्षा 2 राज्य शिक्षा शोध एवं शिक्षक परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी. पटना (बिहार)।
- सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण , विषय – कला शिक्षण, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राजस्थान , राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल , जयपुर।

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
व्यावहारिक मूल्यांकन – ब

विषय – योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावात्मक शिक्षा भाग–2

उद्देश्य

- उत्तम स्वास्थ्य की समग्र अवधारणात्मक समझ का विकास।
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य के मध्य गुणात्मक संबंध की समझ का विकास करने में शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट करना।
- स्वच्छ पेय जल, संतुलित आहार एवं संपूर्ण परिवेशीय स्वच्छता की जानकारी देना।
- समाज के वंचित एवं उपेक्षित वर्ग की समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना।
- योग, व्यायाम एवं खेलकूद की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करना।

योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावत्मक शिक्षा भाग–2				
क्र	पाठ / विषयवस्तु		कुल अंक 20 कालखण्ड 21	
			अंक	कालखण्ड
1	स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा	1.1 बच्चों में शारीरिक, भावनात्मक, सवेगात्मक तथा आध्यात्मिक स्वास्थ्य का निवास 1.2 अच्छी आदतों का विकास एवं समय प्रबंधन जैसे जल्दी जागना, जल्दी सोना, समय पर भोजन तथा समय पर अध्ययन करना। 1.3 स्वास्थ्य एवं शिक्षा के बीच, शिक्षा की पूर्व अपेक्षा के रूप में स्वास्थ्य और शिक्षा के लक्ष्य के रूप में स्वास्थ	05	05
2	विद्यालय में स्वास्थ शिक्षा कार्यक्रंम	2.1 विद्यालय में विद्यार्थी की सुरक्षा सावधानियाँ एवं प्रतिरोधक उपाय तथा प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा 2.2 भोजन के पोषक तत्व संतुलित एवं स्वास्थ्यवर्धक आहार और कुपोषण की समस्या,निवारण,मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम 2.3 रेडक्रास, स्काऊट गाइड की कार्यशैली का परिचय	05	05
03	आवश्यक सामुदायिक स्वास्थ्य	3.1 सामुदायिक स्वास्थ्य का अर्थ, स्वच्छ परिवेश की विशेषताएँ 3.2 वृध्दों, बीमारों तथा दिव्यांगजनों की देखभाल, प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, स्वास्थ्य के क्षेत्र में स्थानीय प्रशासन की भूमिका 3.3 बाजारों में बिकने वाली खुली एवं डिब्बा बंद खाद्य पदार्थो के दुष्प्रभाव की जानकारी	05	05
04	व्यायाम, योग एवं स्थानीय खेल	4.1 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए शारीरिक शिक्षा की अवधारणा तथा योग की प्रमुख गतिविधियाँ	05	06

		4.2 स्थानीय खेल तथा प्रमुख खेलों की जानकारी तथा मैदानों का चिन्हीकरण 4.3 शारीरिक शिक्षा में खेलों का अध्ययन विधियाँ		

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

- स्वास्थ्य, मनुष्य की सबसे अमूल्य संपत्ति है,को दर्शाते हुए स्वास्थ्य के विभिन्न पक्षों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
- मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए सुखमय जीवन हेतु अपने विचारों को परिभाषित कीजिए।
- मध्याहन भोजन कार्यक्रम से विधार्थियों के सामाजिक,धार्मिक,नैतिक मूल्यों का विकास होने के कारणों का उल्लेख कीजिए ।
- विद्यालय में रेडक्रास और स्काउट–गाइड के शिक्षण एवं प्रशिक्षण से विद्यार्थियों में होने वाले गुणवत्ता पर प्रकाश डालिए।
- डिब्बा बंद खाद्य सामग्री के सेवन के पूर्व उत्तम स्वास्थ्य हेतु सावधानियॉ का उल्लेख कीजिए।
- विद्यार्थियों को विद्यालय में स्वच्छ वातावरण एवं उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने वाले तथ्यों का उल्लेख कीजिए।
- परिवार में वृद्व एवं बीमार सदस्यों के देखभाल एवं उपचार के नैतिक कर्त्तव्यों की आवश्यकता है,पर प्रकाश डालिए ।
- योग को विद्यालय में प्रभावी बनाने हेतु शिक्षकों के दिये गये सुझाव का अवलोकन कर क्रियान्वित कीजिए ।
- विद्यालय में प्रमुख एवं स्थानीय खेलों का अभ्यास कराकर,वार्षिक प्रतियोगिता आयोजित करें,तथा किये गये खेलों को सूचीबद्ध करते हुए परिणाम को पंजीबद्ध कीजिए।

संदर्भ –

- स्वास्थ्य शिक्षा – इग्नू एन.सी.ई.आर.टी.सहयोगात्मक परियोजना नईदिल्ली
- विकलांग स्वस्थ व आत्मनिर्भर कैसे बने – विनोद कुमार मिश्र,कल्याणी शिक्षा परिषद् दरियागंज, नई दिल्ली
- योग(कक्षा 6 से 8) शिक्षा – भाग–2 ,एन.सी.ई.आर.टी रायपुर
- विद्यालय स्वास्थ्य शिक्षा – सरयू प्रसाद चौबे, अखिलेश चौबे,मयुर पेपर बैक्स ए–95,सेक्टर–5 नोएडा
- स्थानीय लोक खेल बरछाबारी –चन्द्रशेखर चकोर,
- प्रमुख खेल नियम – हरिसिंह अहलावत,बी.आर.पब्लियर्स जयपुर–01
- स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा भाग–1 – डा. एच.एल.खत्री,पैरागॉन इन्टरनेशनल पब्लिसर्स नई दिल्ली
- जीवन कौशल शिक्षा – श्रीमती समता शेखावत,दिशा पब्लिकेशन जयपुर
- मूल्य एवं नैतिक शिक्षा – रेनु चौधरी,अपोलो प्रकाशन, पिंक सिटी मार्केट पंचवटी राजापार्क जयपुर

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष
व्यावहारिक मूल्यांकन – स

विषय – कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास भाग–2

उद्देश्य–

- कार्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य को समझना।
- कार्य शिक्षा के लक्ष्य, उद्देश्य तथा विषय क्षेत्र को समझना।
- अधिगम सामग्री के महत्व को समझना तथा स्वनिर्मित अधिगम सामग्री का उपयुक्त परिस्थितियों में उपयोग करना ।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए उपयुक्त गतिविधियों की योजना बनाना तथा उनका आयोजन करना।
- कार्य शिक्षा से जुड़े क्षेत्रों की पहचान करना तथा आवश्यक गतिविधियों से जुड़ना।
- शिक्षा में कार्य शिक्षा की आवश्यकता, संकल्पना और प्रकृति को समझना।
- कार्य शिक्षा को अन्य विद्यालयी विषयों के साथ एकीकृत कर पाना।
- श्रम तथा श्रमिक के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति का विकास ।
- कार्य को बच्चे के शारीरिक, मानसिक सामाजिक, सांस्कृतिक विकास के उपकरण के रूप में उपयोग करने के कौशल का विकास।
- कार्य शिक्षा के लिए समुदाय के संसाधनों को पहचानना और संगठित करना।

कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास भाग–2				
क्र	पाठ/ विषयवस्तु		कुल अंक 20 कालखण्ड 21	
			अंक	कालखण्ड
1	कार्य शिक्षा परिप्रेक्ष्य	➢ ऐतिहासिक परिदृश्य – • गांधीजी की बुनियादी शिक्षा • कोठारी आयोग • ईश्वर भाई पटेल समिति • राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE- 1986) • राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF – 2000) • राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF - 2005) • राज्य की पाठ्यचर्या की रूपरेखा (SCF - 2007) ➢ कार्यशिक्षा के उद्देश्य– • संज्ञानात्मक • मनोगत्यात्मक • भावात्मक	10	04
2	कार्य शिक्षा एवं शिक्षण कौशल	• प्रस्तावना • विषयों का कार्य शिक्षा के साथ एकीकरण	10	05

		• पाठ्यक्रम आधारित गतिविधियों की पहचान, आयोजन तथा मूल्यांकन • अनिर्मित सामग्रियों तथा उपकरणों से कार्य करना। • कार्य शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण, कौशल, अभिवृत्ति और मूल्य		
3	**कार्य शिक्षा के क्षेत्र**	➢ **कार्य शिक्षा के क्षेत्र** • स्वास्थ्य एवं स्वच्छता • खाद्य एवं पोषण • संस्कृति, मूल्य एवं मनोरंजन • सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार माध्यम • उपभोक्ता शिक्षा ➢ प्रायोगिक कार्य • समाज सेवा एवं उत्पादक कार्य • खाद्य एवं कृषि • वस्त्र • संस्कृति एवं मनोरंजन • घरेलू विद्युत उपकरण मरम्मत • सूचना प्रौद्योगिकी • परम्परागत व्यवसाय	20	12

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक

कुछ उदाहरण

1. गांधी जी की बुनियादी शिक्षा का सिद्वांत आज भी प्रासंगिक है इसे परिवेश के उदाहरण द्वारा समझाइए।
2. व्यक्ति एक साथ शारीरिक श्रम और अकादमिक चिंतन करता है उदाहरण सहित समझाइए।
3. कक्षा 5 वीं गणित की किसी एक अवधारणा को कार्यशिक्षा से जोड़कर एक गतिविधि का निर्माण कीजिए।
4. विज्ञान के ऐसे 5 सिद्धांतों की सूची बनाएं जिन्हें कार्य शिक्षा के माध्यम से समझाया जा सकता है।
5. कक्षा 7 सामाजिक विज्ञान विषय में कार्य शिक्षा को शामिल करने हेतु गतिविधि की योजना बनाएं। इस गतिविधि से शिक्षक के किन–किन शिक्षण कौशलों का विकास हुआ?

कुछ सुझावात्मक कार्य

क. **समाज सेवा एवं उत्पादक कार्य–** जैसे मोमबत्ती (कैंडल), डिटरजेंट पाउडर, बर्तन साफ करने का पाउडर बनाना आदि।

ख. **खाद्य एवं कृषि–जैसे** कच्चे आम का स्क्वैश, अन्नानास का गीला मुरब्बा, मिश्रित सब्जियों का अचार बनाना, विद्यालय में हर्बल गार्डन का निर्माण आदि।

ग. **वस्त्र**–जैसे बुटिक, बंधेज आदि बनाना।

घ. **संस्कृति तथा मनोरंजन**–जैसे मधुबनी पेंटिंग, भित्ती चित्र आदि बनाना।

ड. **घरेलू विद्युत उपकरण मरम्मत**–जैसे विद्युत वायरिंग, स्विच बोर्ड लगाना आदि।

च. **सूचना प्रौद्योगिकी**–जैसे लघु फिल्म निर्माण आदि।

छ. परम्परागत व्यवसाय–जैसे छींद के पत्तों का आसन, छींद की पत्तियों का फूल झाड़ू , चिकनी मिट्टी के खिलौने आदि बनाना।

1 संदर्भ –

- Work Education in Schools, CBSE, Delhi
- Elementary Teacher Education Curriculum
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE- 1986)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF – 2000)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF - 2005)
- राज्य की पाठ्यचर्या की रूपरेखा (SCF - 2007)
- कार्यक्रम निर्देशिका 'सेवारत अप्रशिक्षित' अध्यापकों के लिए प्रारंभिक शिक्षा में द्विवर्षीय डिप्लोमा।
- कार्यानुभव शिक्षण – मंजू शर्मा, शंकर सिंह नाथावत।
- कार्यशिक्षा डॉ. मुनेष कुमार।
- समाजोपयोगी उत्पादक कार्य।
- कार्य अनुभव का शिक्षण डॉ. मुनेष कुमार।
- शिक्षा की बुनियाद – अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी।

डी.एल.एड. द्वितीय वर्ष

व्यावहारिक मूल्यांकन – द

कम्प्यूटर शिक्षा भाग–2

उद्देश्य :–

- छात्राध्यापकों में सहशैक्षिक गतिविधि के रूप में कम्प्यूटर शिक्षा में रूचि का निर्माण करना।
- छात्राध्यापकों में प्रयोगों जैसे– Constructive and creative approach की अवधारणा को विकसित करना ।
- सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा शिक्षा में सुधार लाना।
- छात्राध्यापकों में सूचना के संग्रहण, वर्गीकरण, विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण के कौशल का विकास करना।
- छात्राध्यापकों में वैश्विक स्तर अनुसार तकनीकी के आधार पर व्यावहारिक परिवर्तन लाना।

कम्प्यूटर शिक्षा भाग–2				
क्र.	पाठ/ विषयवस्तु		कुल अंक 20 कालखण्ड 21	
			अंक	कालखण्ड
1	हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर का परिचय	कम्प्यूटर के विभिन्न भागों (हार्ड डिस्क, रेम मदरबोर्ड, बैटरी, एसएमपीएस, फैन, सी.डी./डी.वी.डी, की पहचान करना तथा इनके कनेक्शन को समझना। आपरेटिंग सिस्टम ,साफ्टवेयर एप्लीकेशन, एवं एंटीवायरस को इंस्टाल करने की विधि का सैधांतिक परिचय।	04	04
2	शैक्षिक उपकरण के रूप में इन्टरनेट का उपयोग	OER (Open Educational Resorces) वेबसाइट का परिचय OER में शैक्षिक सामग्री सर्च करना, डाउनलोड करना एवं उपयोग करना, teacher tube, youtube, Wi-Fi का उपयोग करना। राज्य , राष्ट्र एवं अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थानों के वेबसाइट से सामग्री प्राप्त करना। इन्टरनेट पर कार्य करते समय सुरक्षा सावधानियां।	04	04
3	वर्ड प्रोसेसर एवं प्रेजेन्टेशन का उन्नत उपयोग	वर्ड प्रोसेसर में टेबल के विभिन्न अवयवों का अध्ययन ,मेल मर्ज, स्पेलिंग एवं ग्रामर, आटोटेक्स्ट, आटो करेक्ट ,वर्ड का उपयोग। प्रेजेन्टेशन में चित्रों, ऑडियो, विडियो एवं हाइपरलिंक का उपयोग करना। प्रेजेन्टेशन का ले–आऊट एवं कलर स्कीम बदलना, स्लाइड शो का उपयोग करना।	04	04

4	**डाटा विश्लेषण में स्प्रेडशीट का उपयोग**	स्प्रेडशीट में गणितीय, तार्किक एवं सांख्यिकीय फार्मूला का उपयोग करना, कॉलम के आधार पर डाटा सॉर्ट करना, फिल्टर, पिवोट टेबल, सब टोटल, रो एवं कॉलम को रोटेट करना, पेस्ट स्पेशल का उपयोग।	04	04
5	**विविध**	हिन्दी फॉन्ट (युनीकोड एवं अन्य), गूगल इंडिक का उपयोग, गूगल ड्राइव, डिजिटल लॉकर, सोशल मीडिया MOOC and CMS का परिचय। ऑन लाइन कार्य करने हेतु महत्वपूर्ण जानकारियां।	04	05

आंतरिक मूल्यांकन कुल 20 अंक
कुछ उदाहरण • किसी एक OER के वेबसाइट का वर्णन कीजिए। • इन्टरनेट पर कार्य करते समय क्या सुरक्षा सावधानियाँ रखनी चाहिए। • एन्टीवायरस क्या है एवं क्यों आवश्यक हैं किसी तीन एन्टीवायरस के नाम लिखिए। • वर्ड प्रोसेसर में मेल मर्ज करने की विधि का वर्णन कीजिए। • प्रजेन्टेशन में आडियो एवं विडियो का हाइपरलिंक बनाने की विधि वर्णन कीजिए। • पिवोट टेबल को उदाहरण सहित समझाइयें। • गणितीय,तार्किक एंव सांख्यिकी से समबंधित दो–दो फार्मूला का वर्णन कीजिए। • गूगल ड्राइव क्या है इसके उपयोग पर टिप्पणी लिखिए। • MOOC एवं CMS पर टिप्पणी लिखिए। • डिजिटल लॉकर पर टिप्पणी लिखिए।

संदर्भ –

1-How computer work - Que 10th edition

2-PCs for dummies - Dan Gookin 3rd edition

3-Hardware bible - Que 6th edition

4-Building the Perfect PC - o' Reilly 3rd edition

5-Microsoft word made easy- Rob Hawkins 2017 edition

6-Microsoft word 2007 for dummies - Dan Gookin

7-Microsoft office 2016 for dummies - peter weverka

8-Discovering computer and ms office - Shelly Cashman series 2016

9.डिजिटल कम्प्यूटर इलेक्ट्रानिक्स – गौरव शर्मा।

10.माइक्रोसॉफ्ट 2010 हिन्दी संस्करण।

11-Computer Fundamentals - Architecture organization, Ram, B 4th edition